अंक 4, सितम्बर 2018

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

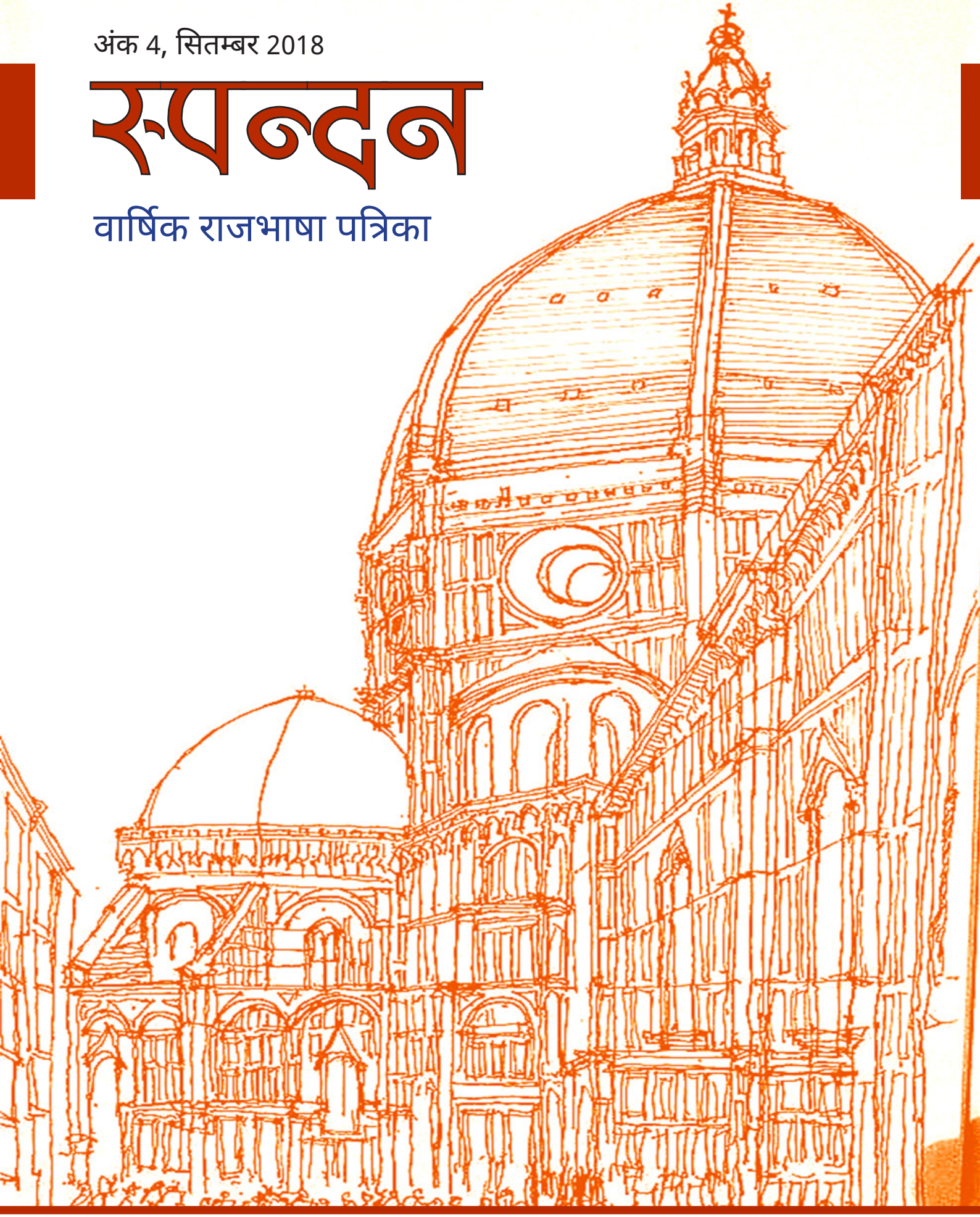

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

संस्थान गान

नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।

श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें है, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।
मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

संस्थान गीत

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे... एसपीए, भोपाल।

तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे .... एसपीए, भोपाल।

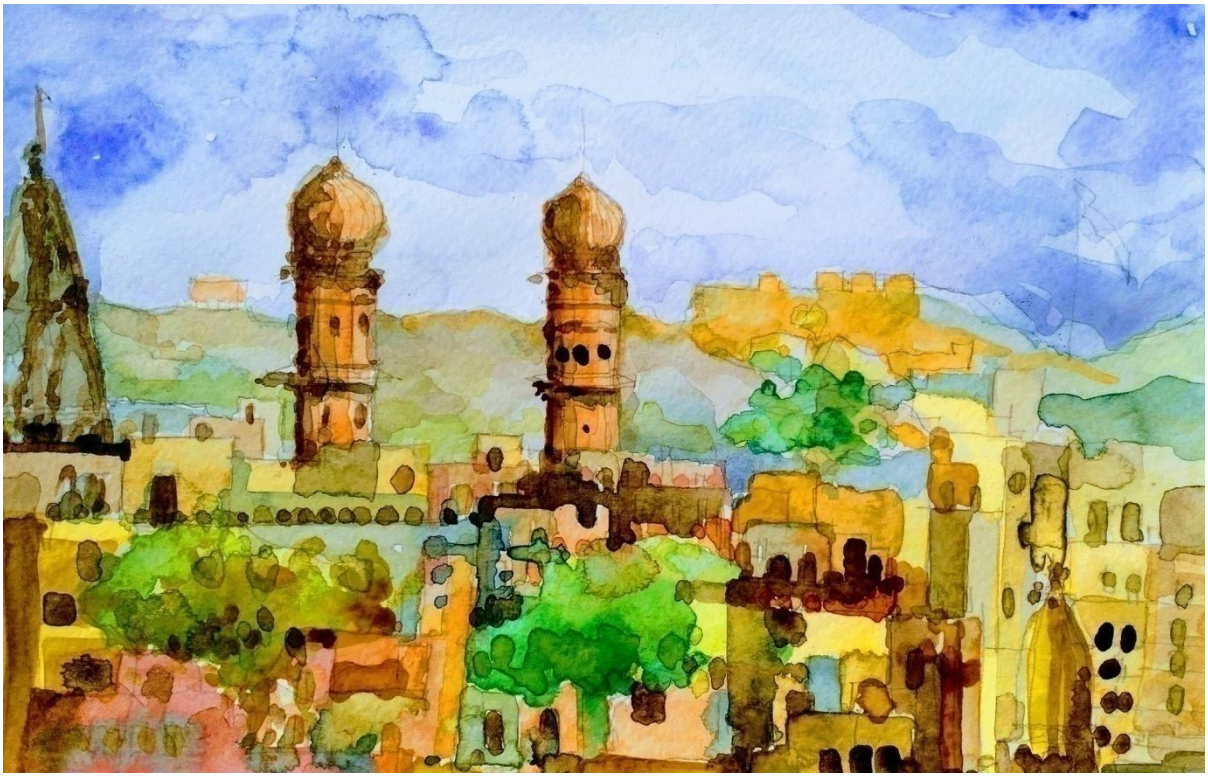

रेखा चित्र : साभार .... डॉ. आनंद वाडवेकर

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	निदेशक की कलम से	01
2	शैक्षणिक गतिविधियाँ	02
3	प्रशासनिक गतिविधियाँ	06
4	क्रीड़ा गतिविधियाँ	10
5	सांस्कृतिक गतिविधियाँ	12
6	छात्रों की उपलब्धियाँ	13
8	स्वरचित कविताएँ	14
9	स्वरचित लेख व यात्रा वर्णन	26

निदेशक की कलम से ...

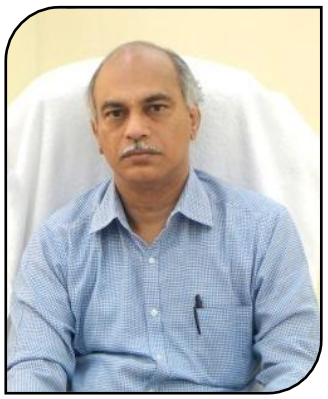

राष्ट्र की प्रगति और विकास सभी नागरिकों की शिक्षा के अधिकार की उपलब्धता पर निर्भर करता है। यह बिना कहे ही जाना जा सकता है कि समानता बनाने तथा आर्थिक स्थिति के आधार पर बाधाओं तथा भेदभाव को दूर करने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। शिक्षा विश्लेषणात्मक कौशल, चरित्र और समग्र व्यक्तित्व का विकास करती है। शिक्षा एक व्यक्ति को अपनी क्षमता का पता लगाने में मदद करती है, जो बदले में एक मजबूत और एकजुट समाज को बढ़ावा देती है। परिवार, समुदाय और राज्य को बड़े स्तर पर ले जाने के लिए मानव समाज के हर स्तर पर शिक्षा बहुत आवश्यक है।

संस्थान की हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के चतुर्थ अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है। पत्रिका के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अंक पर पाठकों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया के लिये सभी को धन्यवाद।

संविधान के अनुच्छेद 351 में निर्धारित किया गया है ''अष्टम् अनुसूची में वर्णित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप शैली और पद बंधों को आत्मसात करते हुए हिंदी भाषा का विकास करना संघ सरकार का दायित्व है।''

मैं उम्मीद करता हूं कि संस्थान हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास में सार्थक भूमिका निभाता रहेगा। मैं पत्रिका के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन

शैक्षणिक गतिविधियाँ

चतुर्थ दीक्षांत समारोह

संस्थान का चतुर्थ दीक्षांत समारोह, 14 अक्टूबर 2017 को आईआईएसईआर, भोपाल के सभागार में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। दीक्षांत समारोह का आरंभ संस्थान गान से हुआ। एस.पी.ए. भोपाल के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात वास्तुकार एवं शिक्षाविद् प्रो. अनिकेत भागवत ने कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। प्रो. श्रीधरन ने स्वागत ज्ञापन व प्रतिवेदन देते हुए पूर्व शैक्षणिक वर्षों में संस्थान के संकाय एवं छात्रों द्वारा हासिल की गई उल्लेखनीय उपलिब्धयों पर प्रकाश डाला एवं आगामी वर्षों में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया। निदेशक महोदय ने एस.पी.ए. भोपाल में वर्तमान में संचालित एवं प्रस्तावित संरचनात्मक योजनाओं के बारे में भी संबोधित किया। दीक्षांत समारोह में पीएच.डी. की 3 उपाधि सहित स्नातक, परास्नातक की 176 उपाधियों से छात्रों को सम्मानित किया गया। जिनमें से 2 स्नातक के छात्रों एवं 5 परास्नातक के छात्रों को **प्रवीणता स्वर्ण पदक** प्रदान किये गए। बहार श्रीवास्तव (बी.आर्क.) एवं गौरब दास महापात्र (एम. प्लान, शहरी एवं क्षेत्रीय नियोजन) को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु **चेयरपर्सन मेडल** प्रदान किया गया। श्री अशफाक आलम, (सहायक प्राध्यापक), श्रीमती मंजू बैसोया पुन्दिर, (वास्तुविद, दुबई) एवं सुश्री प्रशांति राव को पीएच. डी. की उपाधि से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात वास्तुकार एवं शिक्षाविद् प्रो. अनिकेत भागवत ने दीक्षांत समारोह को संबोधित किया। अपने अभिभाषण में प्रो. भागवत ने डिग्री प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी एवं आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. अजय खरे, प्राध्यापक, एस.पी.ए. भोपाल द्वारा किया गया।

स्थापना दिवस के अवसर पर व्याख्यान

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के 9 वर्ष पूर्ण होने पर संस्थान का स्थापना दिवस दिनांक 10 नवम्बर 2017 को प्रो. अनिल गुप्ता की विशेष उपस्थिति में मनाया गया। कार्यक्रम में प्रो. अनिल गुप्ता (हनी बी नेटवर्क फाउण्डर के समन्वयक तथा नेशनल इनोवेशन फाउण्डर के कार्यकारी सहायक) को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने प्रो. अनिल गुप्ता का स्वागत किया एवं संस्थान के 9 वर्ष पूर्ण होने पर सभी को बधाई दी। प्रोफेसर गुप्ता ने ''मीटिंग द अनमेट सोशल नीड्सः चेलेंजेस, कोंट्राडिक्शन, एण्ड क्रिएटिव रिस्पोंस'' विषय पर व्याख्यान दिया। उक्त व्याख्यान से छात्रों को गहन अंतर्दृष्टि दी गई कि कैसे डिजाइन में छोटे और रचनात्मक हस्तक्षेप भी सुधार के लिए समाज में बड़े बदलाव कर सकते हैं। छात्रों ने भरतनाट्यम, कथक, मोहिनीट्टम और मराठी लोक नृत्य जैसे विभिन्न कला रूपों के प्रदर्शन कर अनुपम सांस्कृतिक झांकी प्रस्तुत की।

कार्यशालाः 'रेजिल्येंट सिटीज़-ए लेण्डस्केप एप्रोच'

एसपीए, भोपाल में दिनांक 30–31 अक्टूबर 2017 को 'रेज़िल्येंट सिटीज़ ए लेण्डस्केप एप्रोच' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रायोजन प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन, निदेशक एस.पी.ए. भोपाल के द्वारा किया गया था एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को कार्यशाला में आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में आमंत्रित विशेषज्ञ श्री जी. पद्मनाभन (आपदा विश्लेषक, यूएनडीपी, नई दिल्ली), श्री प्रसन्ना देसाई (अर्बन डिजाइनर, प्रख्यात वास्तुविद्), श्रीमती संस्कृति मेनन (प्रोग्राम डायरेक्टर, सी.ई.ई. पुणे) श्री अंशु शर्मा (आपदा प्रबंधक, सीड्स नेटवर्क, नई दिल्ली) एवं श्री शुभम मिश्रा (सलाहकार, शहरी योजनाकार, नई दिल्ली) थे। दो दिवसीय कार्यशाला में संस्थान के छात्र–छात्राओं को तीन समूहों में विभाजित किया गया। छात्रों ने समूहवार शहरी ऊष्मा तनाव (गर्मी), जल तनाव (सूखा), शहरी बाढ़ जैसे विषयों का अवलोकन कर विशेषज्ञों के समक्ष उत्पन्न समस्याओं एवं उनके उपाय के बारे में प्रस्तुति दी। छात्रों ने कार्यशाला में अपने विषयों पर स्लोगन तैयार किये, जैसे बाढ़ के संदर्भ में **''हम रखें पानी का ध्यान, पानी रखे हमारा ध्यान''**, सूखा के सदर्भ में **''कुदरत है मेहरबान, लेकिन भोपाल है परेशान''** तथा शहर की बढ़ती गर्मी के संदर्भ में **''तपती धरती तपता आकाश, तनाव में है दुनिया, तनाव में है भोपाल, आओ हम मिलकर करें इसका समाधान''।** छात्रों ने शहरी बाढ़ के संदर्भ में अपने अवलोकन में स्थानीय लोगों से चर्चा की और पाया कि वर्ष 2016 की तुलना में वर्ष 2006 की भीषण बारिश में भोपाल शहर के बाढ़ के पानी का ज्यादा एकत्रीकरण देखा गया। महामाई मंदिर के सिंह स्तम्भ पर लगभग 10 फीट पानी वर्ष 2006 में देखा गया, वहीं वर्ष 2016 में बाढ़ के दौरान लगभग 5 फीट पानी सिंह स्तम्भ पर था। उक्त स्थान के अलावा भोपाल शहर के पात्रानाला एवं शाहजानिया पार्क के आस–पास के क्षेत्रों का भी अवलोकन किया गया। कार्यशाला में संस्थान के छात्र–छात्राओं समेत डॉ. तापस मित्रा, डॉ. रमा उमेश पाण्डे, डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर, प्रो. एन. आर. मण्डल, प्रो. बिनायक चौधुरी एवं अन्य संकाय सदस्य उपस्थित थे। कार्यशाला के समन्वयक वास्तुकार सौरभ पोपली (सह प्राध्यापक) थे।

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय सेमिनार (एनएससीसी)

जलवायु परिवर्तन पर राज्य ज्ञान प्रबंधन केंद्र (एसकेएमसीसीसी), ईपीसीओ, पर्यावरण विभाग, म.प्र. शासन, भोपाल में 22–24 फरवरी, 2018 को 'जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (एनएससीसी)' का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्देश्य मध्य प्रदेश में जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में कार्य कर रहे शोधकर्ताओं के लिए मंच तैयार करना, उनके ज्ञान कौशल को साझा करना एवं सीखना और संगोष्ठी में आमंत्रित विशेषज्ञों और प्रतिष्ठित वक्ताओं के साथ अपने विचारों को साझा करने का अवसर प्रदान करना था। कार्यक्रम के दौरान संस्थान द्वारा रिमोट सेंसिंग का उपयोग करते हुए भोपाल शहर के रूफ टॉप सौर पीवी ऊर्जा का संभावित अनुमान लगाने पर एक पेपर प्रस्तुत किया गया। पेपर का मुख्य ध्यान छत पर स्थित सौर पीवी पैनलों के माध्यम से भारतीय शहरों में ऊर्जा उत्पादन की संभावना का

आकलन करने के लिए उपलब्ध छत की मात्रा को मापना था। पेपर शहर की छतों के कुल उपलब्ध क्षेत्र को निकालने के लिए एक स्वचालित, ऑब्जेक्ट उन्मुख दृष्टिकोण को प्रस्तावित करता है।

विश्व विरासत दिवस

एसपीए भोपाल ने 18 अप्रैल 2018 को विश्व विरासत दिवस अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया। उक्त कार्यक्रम का आयोजन संस्थान परिसर के संगोष्ठी हॉल में किया गया था। इस आयोजन का विषय "पारंपरिक जल प्रणालियाँ" था। उक्त आयोजन दुनिया भर में विभिन्न जल प्रणालियों पर वृत्तचित्र दिखाने के साथ प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम में एक प्रस्तुति, बी. आर्क. तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा दी गई, जिन्होंने "कुचमन किले की पारंपरिक जल संरक्षण प्रणाली" का दस्तावेजीकरण कर इंटेल प्रतियोगिता जीती थी। कार्यक्रम में एक प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई जिसमें दर्शकों ने भारत की परंपरा और विरासत के बारे में प्रश्नोत्तरी में भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एक पारंपरिक भारतीय परिवार में दुल्हन के चयन के साथ–साथ विश्व धरोहर सूची में किसी साइट के नामांकन के नतीजों का प्रदर्शन करना था। उक्त कार्यक्रम एम. आर्क. संरक्षण के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा आयोजित और समन्वयित किया गया था।

जीआईएस प्रशिक्षण

योजना और वास्तुकला के विषयों पर जीआईएस और रिमोट सेंसिंग के बेसिक एप्लीकेशन्स पर एक लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम 2 से 6 जुलाई 2018 के मध्य एसपीए भोपाल के भू–सूचना विज्ञान केंद्र में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भू–स्थानिक डेटा के निर्माण, प्रसंस्करण और विश्लेषण का एक बुनियादी विचार प्रतिभागियों को देना था। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभागियों ने न केवल जीआईएस में अवधारणाओं और अनुप्रयोगों के बारे में सीखा, बल्कि विभिन्न ओपन सोर्स टूल्स का उपयोग भी किया जिसके माध्यम से वे अपने जीआईएस विश्लेषण को और अधिक कुशल बना सकते हैं। इस कार्यशाला में 17 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशाला में देश भर के प्रतिभागी जैसे पटना, ग्वालियर, दिल्ली, विजयवाड़ा और भोपाल आदि के छात्र, पेशेवर और शिक्षाविद सम्मिलित हुए। प्रशिक्षण के दौरान स्व–अभ्यास भी कराया गया जैसे जियो रिफ्रेंसिंग, जियोडाटाबेस का निर्माण, डिजिटाइजेशन, एक्सट्रैक्शन और ओवरले उपकरणों की आवश्यकता, टूल थैमैटिक मैप्स और बिल्डिंग क्वेरी इत्यादि पर अभ्यास किया गया, जिससे प्रतिभगियों ने विभिन्न कमांडों को सीखा और छोटी परियोजनाओं में कार्य करने में सक्षम बने। उक्त प्रशिक्षण

कार्यक्रम में डॉ. एस.के. चोरे द्वारा ''इंटीगेशन ऑफ जीआईएस एण्ड रिमोट सेंसिंग इन प्रोजेक्ट'' विषय पर एक व्याख्यान भी दिया गया।

हृदय योजना के तहत विरासत संसाधनों के प्रबंधन पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

'हृदय' योजना के तहत विरासत संसाधनों के प्रबंधन पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आवास एवं शहरी मामलों का मंत्रालय, भारत सरकार एवं एनआईयूए (भारतीय शहरी मामले का संस्थान) द्वारा प्रायोजित था। प्रशिक्षण योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के द्वारा 31 जुलाई 18 से 03 अगस्त 2018 तक आयोजत किया गया। प्रशिक्षण में भारत सरकार द्वारा संचालित हृदय योजना के 10 शहरों में से 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। श्री जगन शाह (निदेशक एनआईयूए) एवं श्री सुमित गखर (सचिव, हृदय योजना) भी प्रशिक्षण में उपस्थित हुए थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य 'हृदय' योजना के अंतर्गत लक्ष्य निर्धारित करने हेतु 'हृदय' के अधिकारियों को शहर के गुणों को समझने, योजना दस्तावेजों में विरासत सम्पत्तियों को शामिल करने, विरासत संसाधनों के प्रबंधन के लिए उपकरण विकसित करने, 'हृदय' योजना के तहत बनाये गए सम्पत्ति, नवीन राजस्व अवसरों और स्थिरता प्राप्त करने के तरीकों पर काम करना था।

विभिन्न प्रशिक्षण मॉड्यूल के अनुसार ज्ञान को साझा करने के लिए पूरे भारत से अग्रणी संरक्षण पेशेवर संकाय प्रशिक्षण में उपस्थित थे जैसे अजय खरे, दिव्या गुप्ता, विशाखा कवाठेकर, देवाशीष नायक, रचना खरे, गुरमीत राय, शिखा जैन, शालिनी दास गुप्ता, नवीन पिप्लानी, विकास दिलवारी, हरि रंजन राव, ओ.पी. मिश्रा, डॉ. एन. श्रीधरन, श्वेता वार्डिया एवं रमेश पी. भोले आदि। संग्रहालयों के निर्माण के लिए सामुदायिक भागीदारी का पता लगाने के लिए फील्ड विज़िट आदिवासी संग्रहालय में की गई, जो निधि चोपड़ा और एमपी पी संग्रहालय द्वारा ओ. पी. मिश्रा द्वारा समन्वयित की गई। भोपाल शहर में विरासत संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधन के दृष्टिकोण के बारे में संवेदनशीलता के लिए मिंटो हॉल, सदर मंजिल, गौहर महल के क्षेत्रीय दौरे का आयोजन किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री राहुल जैन, आयुक्त, टी एण्ड सीपी निदेशालय, मध्य प्रदेश शासन थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाये गये थे, जिनका उद्देश्य प्रत्येक सत्र में प्रतिभागियों और संकाय को 'साझाकरण माध्यम' से सिखाना था।

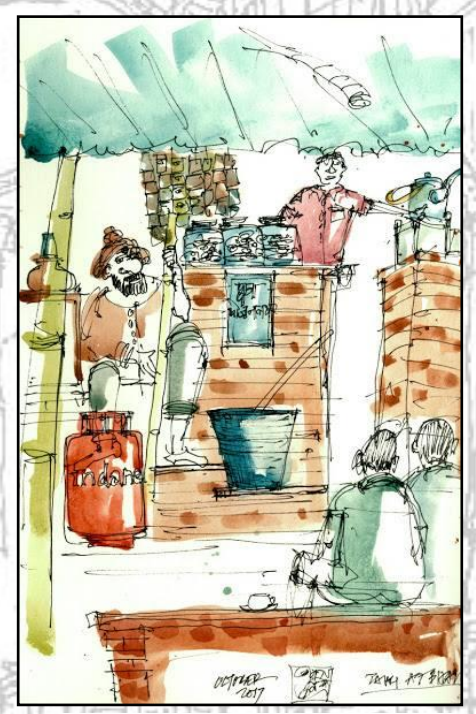

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

प्रशासनिक गतिविधियाँ

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान परिसर में हिन्दी पखवाड़ा 15 से 28 सितम्बर 2017 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा ज्ञान के संवर्धन व इसके व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु छात्रों व छात्राओं, शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताऐं जैसे 'निबंध लेखन, सुलेख लेखन, हिन्दी टंकण, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली, कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण, हिंदाक्षरी, हिंदी कविता एवं गीत प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गई। उक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रख्यात साहित्यकार 'श्री राजेश जोशी जी', प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन (निदेशक), श्री राजेश मौज़ा (कुलसचिव) प्रो. अजय खरे, (प्राध्यापक) प्रो. बिनायक चौधुरी (प्राध्यापक) द्वारा संस्थान की हिन्दी पत्रिका ''स्पन्दन'' अंक–3 का विमोचन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि 'श्री राजेश जोशी जी', निदेशक महोदय व कुलसचिव महोदय ने पुरस्कार प्रदान किए।

विजयी प्रतिभागी :–

निबंध लेखन
- प्रथम – अनुग्रह नागाइच
- द्वितीय – प्रतिभा सिंह जेना
- तृतीय – बिन्दु सुरेश

सुलेख लेखन
- प्रथम – आनंद किशोर सिंह
- द्वितीय– समृद्धि गिरी (विद्यार्थी)
- तृतीय– अभिनव श्रीवास्तव

हिन्दी टंकण
- प्रथम – सरिता पंवार
- द्वितीय – पुष्पेन्द्र सिंह
- तृतीय – वीरेन्द्र श्रीवास्तव

अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद
- प्रथम – अनुग्रह नागाइच
- द्वितीय – यशो आदित्य (विद्यार्थी)
- तृतीय – दीपाली बागची

प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली
- प्रथम – सरिता पंवार
- द्वितीय – प्रतिभा सिंह
- तृतीय – आनंद किशोर सिंह

कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण
- प्रथम – आनंद किशोर सिंह
- द्वितीय – बिन्दु सुरेश
- तृतीय – दिलीप रंगारे

हिन्दी के पर्यायवायी शब्द
- प्रथम – प्रतिभा सिंह जेना
- द्वितीय – अनुग्रह नागाइच
- तृतीय – सोनाली गुरूंग (विद्यार्थी)

हिन्दाक्षरी प्रतियोगिता
- प्रथम सौरभ तिवारी, अपूर्व श्रीवास्तव, शिल्पम सक्सेना, अनुग्रह नागाइच, शिवानी (ग्रुप)
- द्वितीय प्रशांत श्रीवास्तव, प्रशीदा मुकुनन्दन, भगवान सिंह, चिन्मय सातभाई (ग्रुप)
- तृतीय सोनल तिवारी, अंकित कुमार, क्षमा पुणताम्बेकर, दिलीप रंगारे, गिरीश प्रसाद सती (ग्रुप)

भजन/गज़ल गायन प्रतियोगिता
- प्रथम – श्वेता सक्सेना
- द्वितीय – सौरभ तिवारी
- तृतीय – रामेन्द्र सिंह सिसोदिया

कविता पाठ/लेख
- प्रथम – जयति दुदानि (विद्यार्थी)
- द्वितीय – अनुराग उपाध्याय
- तृतीय – रेनु पाठक

विशेष पुरस्कार विजेता का नाम श्री एस. श्रीनिवास राव

सक्रिय सहभागिता पुरस्कार विजेताओं के नाम रामेन्द्र सिंह सिसोदिया, जितेन्द्र कुमार, जयति दुदानि, (विद्यार्थी) पियूष सिसोदिया, (विद्यार्थी)

राष्ट्रीय एकता सप्ताह

दिनांक 4–6 नवंबर 2017 को राष्ट्रीय एकता सप्ताह का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में क्रीड़ा गतिविधि मिनी मैराथन दौड़ आयोजित की गई जिसमें एसपीए भोपाल के सभी कर्मचारियों व छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया। इसके अलावा छात्रों के लिए बास्केटबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, वॉलीबॉल इत्यादि खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया।

कार्यशाला

कम्प्यूटर में यूनिकोड का प्रयोग

दिनांक 16 फरवरी 2018 को संस्थान में राजभाषा के प्रचार व प्रगामी प्रयोग हेतु हिंदी कार्यशाला 'कम्प्यूटर में यूनिकोड का प्रयोग' विषय पर आयोजित की गई। कार्यशाला में एनआईटीटीटीआर, भोपाल के सह प्राध्यापक डॉ. एम. ए. रिज़वी, विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किये गए थे। कार्यशाला में वृहद स्तर पर संस्थान के कर्मचारियों ने भाग लिया तथा प्रशिक्षण प्राप्त कर यूनिकोड विधि के माध्यम से हिंदी टाइपिंग के ज्ञान प्राप्त करके लाभान्वित हुए।

कार्यशाला

आचरण एवं आवश्यक नियमों की जानकारी

संस्थान परिसर में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सहयोग से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28 मार्च 2018 को किया गया। उक्त कार्यशाला का विषय प्रशासनिक कार्य में आचरण एवं आवश्यक नियमों की जानकारी देना था। कार्यशाला श्री पुष्पेंद्र सिंह, कनिष्ठ सहायक, एसपीए भोपाल के विशेष मार्गदर्शन में आयोजित की गई थी। उक्त कार्यशाला में वृहद स्तर पर संस्थान के कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी कार्यशाला

सूचना का अधिकार अधिनियम (2005) एवं कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम (2013)

संस्थान परिसर में कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 22 दिसम्बर 2017 को संस्थान के सभा कक्ष (क्यू.आई.पी.) में किया गया। उक्त कार्यशाला संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मार्गदर्शन में आयोजित की गई थी। कार्यशाला में प्रस्तुति श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिंदी सहायक द्वारा, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम (2013) विषय पर तथा श्री डॉ. रिपन रंजन विश्वास, पुस्तकालय सहायक द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम (2005) पर दी गई। संस्थान के अधिकारीगण व कर्मचारीगण ने उक्त कार्यशाला का लाभ लिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

दिनांक 20–21 जून 2018 को योजना एवं वास्तुकला विद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सफलतापूर्वक मनाया गया। दिनांक 20 जून 2018 को एसपीए भोपाल ने शासकीय माध्यमिक विद्यालय, ग्राम बरखेड़ा सालम, भोपाल में योग शिक्षा पर जागरूकता फैलाने हेतु योग शिविर, पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की। विद्यालय के 60 से अधिक छात्रों ने पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता में भाग लिया और योग शिविर में लगभग 100 छात्रों ने भाग लिया। पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेता को पुरस्कार प्रदान किये गए तथा योग गतिविधियों के लिए ग्राम के छात्रों के बीच सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पुरस्कार घोषित किये गये।

20 जून की सुबह, योग शिविर का उद्घाटन विवेकानंद केंद्र, भोपाल के निदेशक, कुलसचिव एवं विशेषज्ञों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ। 21 जून 2018 को एसपीए भोपाल में पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता एवं सर्वश्रेष्ठ योग प्रदर्शन के लिए छात्रों को पुरस्कार और प्रशंसा प्रमाण पत्र दिये गये। एसपीए भोपाल के संकाय सदस्य, कर्मचारीगण और छात्र तथा ग्राम बरखेड़ा सालम के छात्रों, ने निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। उपस्थित जनसमूह की सुविधा एवं सुरूचिपूर्ण ढंग से योग कराने के लिए मंच तैयार किया गया था, जिस पर बैठ कर योग प्रशिक्षकों (विवेकानंद केन्द्र, भोपाल) द्वारा विभिन्न यौगिक मुद्राओं का प्रदर्शन किया गया, जिनको देखकर समस्त जनसमूह ने उन क्रियाओं को दोहराया। प्रतिभागियों ने मानव जीवन में योग के महत्व को समझा, योग करना सीखा व प्रतिदिन योगाभ्यास करने हेतु प्रेरित भी हुए।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान परिसर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 23 – 27 अक्टूबर, 2017 के मध्य मनाया गया। एसपीए, भोपाल के संकाय और स्टाफ सदस्यों ने 26 अक्टूबर, 2017 को अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में सतर्कता प्रतिज्ञा ली। जागरूकता सप्ताह के दौरान छात्रों को सतर्कता जागरूकता के विषय पर स्लोगन लिखने के लिए प्रेरित किया गया, जो कि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में थे। बड़ी संख्या में छात्रों ने अपने स्लोगनों को मुख्य सतर्कता अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया एवं उक्त स्लोगन के पोस्टर संस्थान परिसर के विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित किये गए।

संस्थान के मुख्य सतर्कता अधिकारी ने सतर्कता सप्ताह का निरीक्षण करने की आवश्यकता पर बल दिया। चूंकि अकादमिक भ्रष्टाचार किसी भी शैक्षणिक संस्थान के लिए सबसे बड़ा खतरा है, इसलिए छात्रों को अकादमिक भ्रष्टाचार, अर्थात् चोरी, झूठीकरण, धोखाधड़ी, प्रलोभन, व्यवधान, प्रोफेशनल दुर्व्यवहार, औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप से प्रतिरूपण के विभिन्न रूपों से अवगत कराना सतर्कता जागरूकता सप्ताह का उद्देश्य था।

गणतंत्र दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 26 जनवरी 2018 को संस्थान में 69 वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। समारोह में संस्थान के संकायगण सदस्य, अधिकारीगण, कर्मचारीगण व छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हुए। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन, ने ध्वजारोहण किया व संस्थान के सुरक्षागार्ड ने राष्ट्रीयध्वज को सलामी दी। निदेशक महोदय ने सभा को संस्थान की आगामी कार्ययोजनाओं की जानकारी दी। अध्यक्ष, छात्र परिषद ने अपने उद्बोधन में वर्ष के दौरान छात्रों की उपलब्धियों के विषय में बताया। उक्त समारोह में छात्र–छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक नृत्य व संगीत का आयोजन किया गया।

स्वतंत्रता दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान परिसर में बड़े हर्षोल्लास के साथ 15 अगस्त 2018 को 72 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन, ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया एवं साथ ही संस्थान के सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। कार्यक्रम राष्ट्रीय गान के साथ प्रारंभ हुआ। प्रो. श्रीधरन ने अपने उद्बोधन में संस्थान की उपलब्धियों को बताया। उक्त समारोह में संस्थान के छात्रों ने संगीत व नृत्य के माध्यम से प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में संस्थान के सभी छात्र–छात्रा, शिक्षक, अधिकारीगण व कर्मचारीगण उपस्थित थे।

सुरक्षा को बढ़ाने हेतु प्रदर्शन कार्यक्रम

संस्थान परिसर में सुरक्षा व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए दिनांक 09 नवम्बर 2017 को नगर निगम भोपाल के सहयोग से सुरक्षा व्यवस्था को बढ़ाने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में गैस सिलेण्डर के सही तरीके का प्रयोग करने व आपात काल की स्थिति में आग से बचने के उपाय विशेषज्ञों द्वारा बताया गया व उनका प्रायोगिक प्रदर्शन भी कार्यशाला के दौरान किया गया।

पर्यावरण दिवस

एसपीए, भोपाल में दिनांक 05 जून 2018 को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण को बचाने हेतु शपथ ग्रहण की गई। उक्त शपथ ग्रहण मे श्री राजेश मोज़ा (कुलसचिव) प्रो. बिनायक चौधुरी (संकायाध्यक्ष, शैक्षणिक मामले) प्रो. संजीव सिंह (विभाग प्रमुख, वास्तुकला) समेत संस्थान के संकायगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण, सुरक्षा कर्मचारी व सफाई कर्मचारी उपस्थित थे। शपथ ग्रहण के पश्चात् उपस्थित सभी जन समूह ने संस्थान परिसर में स्थित क्यू.आई.पी. भवन के आस पास के क्षेत्रों की सफाई की।

मातृभाषा दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में दिनांक 21 फरवरी 2018 को मातृभाषा दिवस मनाया गया। उक्त दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रनिर्माण में मातृभाषा की भूमिका के संदर्भ में संस्थान परिसर में एक प्लेन बोर्ड पर छात्रों को अपनी–अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति लिखने हेतु अभिप्रेरित किया।

क्रीड़ा गतिविधियाँ

वर्ष 2017–2018 में आयोजित विभिन्न टूर्नामेंटों में प्रत्येक खेल का हमारी टीमों ने अभ्यास किया। संस्थान परिसर में छात्रों के मध्य विभिन्न इंटर बैच और इंट्रा बैच के इवेंट हुए, जहां हमारे छात्रों ने अच्छा प्रदर्शन किया। विभिन्न दिवसों पर टूर्नामेंट आयोजित किए गए :

- बैडमिंटन टूर्नामेंट 8–10 सितंबर, 2017,
- इंट्रा बैच टेबल टेनिस टूर्नामेंट 15–17 सितंबर, 2017,
- इंट्रा बैच बास्केटबाल टूर्नामेंट 22–24 सितंबर, 2017,
- इंट्रा बैच क्रिकेट टूर्नामेंट 22–24 सितंबर 2017।

कॉलेज में इस प्रतिस्पर्धी माहौल के बाद हमारे पड़ोसी संस्थान आईआईएसईआर, भोपाल के साथ मैत्रीपूर्ण मैच हुए। बास्केटबॉल की हमारी टीम (लड़के/लड़कियां); टेबल टेनिस (लड़के/लड़कियां); वॉलीबॉल (लड़के/लड़कियां); क्रिकेट; शतरंज (लड़के/लड़कियां) ने मैचों में भाग लिया। एनएलआईयू, विरुधाका, देश भर से भाग लेने वाले 30 संस्थानों के साथ राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता 13 से 15 अक्टूबर 2017 तक आयोजित की गई थी। हमारे कॉलेज ने बास्केटबाल (लड़के/लड़कियां) में भाग लिया; बैडमिंटन (लड़के/लड़कियां); टेबल टेनिस (लड़के/लड़कियां); वॉलीबॉल (लड़के/लड़कियां); शतरंज (लड़के/लड़कियां); क्रिकेट, फुटबॉल, कैरम, प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। संस्थान ने असाधारण

प्रदर्शन दिखाते हुए इस टूर्नामेंट में कुल 2 स्थानों पर विजय प्राप्त की। इसके बाद सत्र और ऊर्जा को बनाए रखने के लिए इंटर बैच और इंट्रा बैच प्रतियोगिताएं हुईं, जिनसे सत्र शुरू हुआ। प्रतियोगिताओं का विवरण निम्न है:

- 11 नवंबर, 2017 को फाउंडेशन डे कप क्रिकेट मैच (संकाय–कर्मचारी / छात्र)
- 17 से 19 नवंबर 2017 को इंटर बैच फुटबॉल टूर्नामेंट
- इंटर बैच क्रिकेट मैच, 20 जनवरी 2018
- क्रिकेट मैच (छात्र) 11 फरवरी 2018

14 से 16 फरवरी 2018 के बीच एसपीए दिल्ली और विजयवाड़ा दोनों की भागीदारी के साथ भव्य इंटर–एसपीए स्पोर्ट्स मीट की मेजबानी एसपीए भोपाल ने की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भागीदारी के साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के तीन दिन सुचारू रूप से आयोजित किए गए। प्रत्येक कॉलेज की टीमों ने बास्केटबॉल (लड़कों / लड़कियों), बैडमिंटन (लड़कों / लड़कियों), टेबल टेनिस (लड़कों / लड़कियों), वॉलीबॉल (लड़के / लड़कियों); शतरंज (लड़के / लड़कियां); क्रिकेट, फुटबॉल और कैरम में हिस्सा लिया।

खेल प्रतियोगिता, एसपीए भोपाल और आईआईएसईआर, भोपाल के मैदानों पर आयोजित की गई थी। प्रतिस्पर्धी माहौल और स्वस्थ खेल भावना के साथ, हमारा कॉलेज एसपीए दिल्ली के साथ रनर अप के रूप में सूची में सबसे ऊपर था। हमारे खिलाड़ियों ने फुटबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, वॉलीबॉल, शतरंज और कैरम खेल प्रतियोगिताओं में जीत हासिल की। इंटर एसपीए के बाद, इंट्रा बैच खेल निम्न गतिविधियों को खेल पर्यावरण के विवरण को बनाए रखने के लिए शुरू किया गया है:

- क्रिकेट मैच टूर्नामेंट (16–18 मार्च 2018)
- टेबल टेनिस टूर्नामेंट (23–25 मार्च 2018)
- इंटर बैच बास्केटबाल टूर्नामेंट (14–15 अप्रैल 2018)

संस्थान ने भोपाल स्थित मैनिट संस्थान में आयोजित 'स्पोर्टोमीनिया' प्रतियोगिता में भी भाग लिया और सेमीफाइनल तक पहुंचे।

'स्पोर्टोमीनिया' के बाद जेएलयू स्पोर्ट्स उत्सव था जिसमें हमारे खिलाड़ी बास्केटबाल सेमीफाइनल और कबड्डी क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे। छात्रों की गतिविधियों के अलावा हमारे संकाय के सदस्य / कर्मचारीगण भी सत्र के दौरान सक्रिय थे। हमारे संकाय / स्टाफ टीम ने आईआईएसईआर संकाय टीम बनाम एसपीए संकाय टीम ने क्रिकेट मैच खेला और विजय प्राप्त की। एक टूर्नामेंट का आयोजन क्लब हाउस में स्टाफ क्लब संकाय कर्मचारियों, संकाय सदस्यों, बच्चों और सभी आवासीय परिवारों के लिए किया गया था। टेबल टेनिस, कैरम, शतरंज और क्रिकेट मैच जैसे खेल आयोजित

किए गए। समग्र खेल सत्र उत्साही और मैत्रीपूर्ण था। हम आगामी सत्र के साथ इसे आगे रखने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

एसपीए भोपाल की सांस्कृतिक समिति में आठ क्लब हैं जैसे प्रिशा, फोटोग्राफी, गेमिंग, आर्ट एंड क्राफ्ट, संगीत, ड्रामा, नृत्य एवं साहित्य। इन क्लबों को एक साथ गठित किया गया है ताकि छात्रों की भागीदारी अधिक से अधिक संख्या में हो एवं सक्रिय प्रतिभागिता प्रदान की जा सके। प्रत्येक क्लब के अपने समन्वयक हैं जो समय–समय पर कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं को आयोजित करते हैं। छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों जैसे नॉस्प्लान, एमएनआईटी जयपुर में सांस्कृतिक उत्सव, एसपीए भोपाल में एकफ्रासिस और अन्य प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते हैं। इन कार्यक्रमों में भागीदारी, छात्रों को चुनौतियों का सामना करने के लिए, आत्मविश्वास और परिपक्व बनने के लिए, अपनी छिपी प्रतिभा का पता लगाने में मदद करती है। एकफ्रासिस इंटर एसपीए नृत्य प्रतियोगिता 'मिराज' में टीम का गठन किया गया था और नृत्य समिति ने इसमें प्रथम पुरस्कार जीता और 'विलाया' नृत्य समूह द्वारा किए गए उद्घाटन नृत्य ने जंगली हिप्पोप नृत्य का प्रदर्शन किया।

संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर 'नृत्यांजली' शास्त्रीय नृत्य कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम उक्त कार्यक्रम में 26 कलाकार थे जो शास्त्रीय क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए तैयार हुए। कार्यक्रम गणेश स्तुति के साथ शुरू हुआ और शिव के साथ समाप्त हुआ, जिसके मध्य में एक नटराज ब्रह्मांडीय नर्तक, रबींद्रो संगीत, मोहिनीअट्टम व नृत्य के शास्त्रीय रूपों, भरतनाट्यम, कथक और लोक नृत्य जोगुवा की प्रस्तुति भी उक्त समारोह में हुई।

स्पिक मैके

संस्थान परिसर में स्पिक मैके (भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं संस्कृति के प्रचार हेतु युवाओं की समिति) के एक चरण में 14 सितंबर 2017 को सायं 05:30 से 07:30 बजे के मध्य ओडिसी नृत्य का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में प्रसिद्ध ओडिसी नर्तक पद्मश्री रंजना गौहर ने नृत्य अभिनय किया। कार्यक्रम में नृत्य मंडल के 03 सदस्य शामिल थे। प्रख्यात कलाकार ने कार्यक्रम में सम्मिलित छात्रों एवं कर्मचारियों से 'ओडिसी नृत्य' की मुख्य विशेषताएं साझा की तथा सभी कर्मचारियों, अधिकारियों व छात्र–छात्राओं ने प्रदर्शित नृत्य का आनंद लिया व उनके प्रदर्शन की सराहना की। दिनांक 11 एवं 12 जनवरी 2018 को पंडित रोणु मजूमदार बांसुरी पर एवं दिनांक 20 जनवरी 2018 को पंडित विश्व मोहन

भट्ट ने मोहन वीना/स्लाइड गिटार पर शानदार प्रदर्शन किया। उक्त सभी मनोरंजक कार्यक्रमों में एसपीए भोपाल के छात्र–छात्राओं, संकायगण सदस्यों एवं स्टाफ ने उपस्थित होकर आनंद लिया।

छात्रों की उपलब्धियाँ

नासा कन्वेंशन

एसपीए भोपाल के वास्तुकला के छात्रों ने 60 वें वार्षिक नासा कन्वेंशन में भाग लिया जो कि दिनांक 29 जनवरी से 2 फरवरी, 2018 तक डीसी स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, वागामन, केरल में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में संस्थान के छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया। उक्त प्रतियोगिता में छात्रों ने कुल 11 ट्रॉफी में भाग लिया, वार्षिक नासा डिजाइन प्रतियोगिता से संस्थान की 2 प्रविष्टियों को शीर्ष 100 में सूचीबद्ध किया गया। वास्तुकला लेखन में शीर्ष 20 में 2 प्रविष्टियों को सूचीबद्ध किया गया। डेस्टेक चैलेंज में शीर्ष 10 में शॉर्टलिस्टेड रहे। औद्योगिक डिजाइन प्रतियोगिता में "विशेष उल्लेख" सहित इन छात्रों के अलावा बहुत से छात्रों ने विभिन्न 'स्पॉट इवेंट्स' में भी जीत हासिल की।

नॉसप्लान सम्मेलन

एसपीए भोपाल के प्लानिंग के छात्रों ने अमिटी विश्वविद्यालय, गुड़गांव में आयोजित 19 वें वार्षिक नॉस्प्लान सम्मेलन में प्रतिभागिता की। उक्त सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर पर 23 महाविद्यालयों ने हिस्सा लिया था। सम्मेलन तीन दिवसों तक आयोजित किया गया । उक्त सम्मेलन में 16 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

करंट प्रेक्टिसः प्रथम पुरस्कार (पैनल): सी. हरिदास, रिद्धिमा कंवल, केएसबी श्रीनिधि (तृतीय वर्ष, बी प्लान) प्रंजल कावरे, अखिलेश सिंह सिसोदिया (द्वितीय वर्ष, बी. प्लान) सुमित सिंह (प्रथम वर्ष एम. प्लान (यूआरपी), तृतीय पुरस्कार (मंच पर): जोशी सीलम, सायली मोस्बी, गुगुलोथ राजनीश (तृतीय वर्ष बी. प्लान) द्रुति गंगवार, भव्यता कटयाल (द्वितीय वर्ष बी. प्लान), सौरब जोशी (द्वितीय वर्ष एम. प्लान (यूआरपी)।

पॉलिसी फॉर्मूलेशनः तृतीय पुरस्कारः सुजीत सौरब, महक दावरा (चतुर्थ वर्ष बी. प्लान), अमित पतजोशी, धारणा डांग, कुलदीप वामसी (तृतीय वर्ष बी. प्लान), आयुशी मित्तल (द्वितीय वर्ष बी. प्लान)

प्रश्नोत्तरीः प्रथम पुरस्कारः सर्वेश समदर्शी, हरिदास (तृतीय वर्ष बी. प्लान)

कथकरः प्रथम पुरस्कारः धारणा डांग (तृतीय वर्ष बी. प्लान), अखिलेश सिंह सिसोदिया, दीक्षा विश्वास (द्वितीय वर्ष बी. प्लान) श्रुतिका जैन (प्रथम वर्ष बी प्लान)

शोकेसः तृतीय पुरस्कार (संस्थान के सभी प्रतिभागी)

इनफार्मल

स्किटः तृतीय पुरस्कारः ओशनिका भट्ट, श्रुतिका जैन, चंद्रिका, अखिलेश सिंह, मुस्कान, स्वेता सोरेन, ऋषव कुमार, सुमित संगम, ईशिता सिंह (प्रथम वर्ष बी. प्लान) दीक्षा विश्वास (द्वितीय वर्ष बी. प्लान)

उक्त सम्मेलन में संस्थान से 54 प्रतिभागी शामिल हुए थे। जिसमें यूनिट कॉर्डिनेटर – अली नासिर बंदूकवाला क्वाला, यूनिट कोषाध्यक्ष – रिदिमा कनवाल और सह संपादक – द्रुति गंगवार थे।

संस्थान के बी. प्लान तृतीय वर्ष के छात्र अमित पतजोशी को इस वर्ष नॉस्पलान के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं बी. प्लान द्वितीय वर्ष की छात्रा भव्यता कत्याल को नये राष्ट्रीय वेब प्रबंधक के रूप में चुना गया।

स्वरचित कविताएँ

यह मेरा शहर! कब आएगा मुझे नज़र?

दिल्ली वालों को समर्पित

यह मेरा शहर! कब आएगा मुझे नज़र?
यह मेरा शहर!
कब होगा मुझे इस पर फख़्र?
यह धुँध कब छँटेगी,
कब आएगा मुझे कुछ नज़र?
लगभग दो करोड़ लोगों का घर,
ये दिल्ली शहर,
अब दर बदर,
दर्द भरा मंज़र।
हर तरफ़, बस बुरी ख़बर,
ना दिखती कोई डगर,
हिंदुस्तानी इतिहास का सबसे निराला नगर,
आज चिमनी क्यूँ बन गया पर?
साँसे है रुक गई,
पास है दिखती क़बर,
धुआँ धुआँ सा है,
इंसान ही का है ये क़हर।
गाड़ियाँ अब भी दौड़ रही,
स्कूल क्यूँ बंद है मगर?
सियासत की रोटी सेकते राजा वज़ीर,
पर प्यादे क्यूँ खाए ज़हर?
जब धूप सुहानी आ जाए,
उस वक़्त बता देना पहर।
यह मेरा शहर!
बस आ जाए मुझे नज़र?

सौरभ तिवारी
सहायक प्राध्यापक

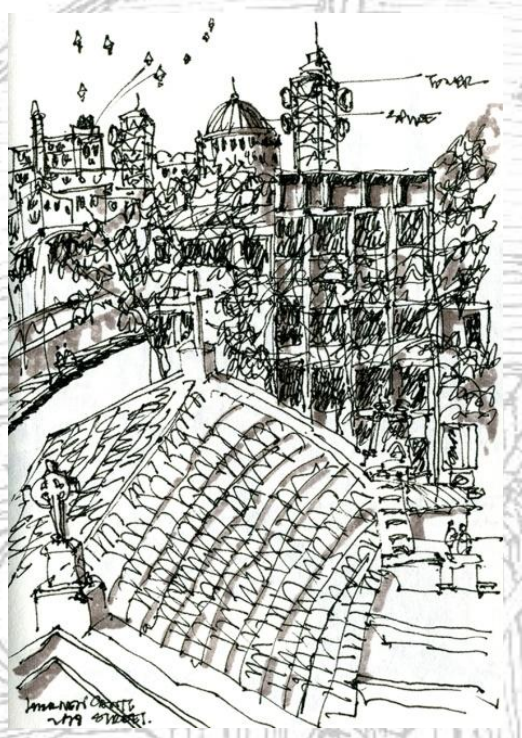

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

साथ

साथ अपनों का मिला ताउम्र मुझे,
फक्र होता है, काबिल बना उम्मीद पर।
कर सकूं मैं भला, ख्वाहिश रहती है मेरी,
रोज अच्छा कर गुजरने, रास्ते दिखते मुझे।।

कौन भला कौन बुरा, मिला मुझे इस राह में,
याद नहीं पड़ता अभी, नई डगर की चाह में।
जिंदगी में दरबदर, आये जो धूप–छांव वो,
मंजिलों तक पहुंचने की, अब सीढ़ी लगती मुझे।।

आनंद किशोर सिंह
अनुभाग अधिकारी

बहार

मौसमों की बानगी पे जिन्दगी गुलजार है।
गुल कभी खिले कभी कलियों की बहार है।

चल पड़ी है जिन्दगी, यूँ हवा में बयार सी।
दिख रही हर बुत मुझे, मूरत हो जैसे प्यार की

गुंजा–ए–दिल लबरेज़ है फिर आज एतबार से।
इख्तियार हो रहा है मौसमें गुल बहार से।

अश्क भी गिरते हैं तो लब पर ठहर जाते हैं वो।
आबशारों पे मचल कर झिलमिला उठते हैं वो।

अमित खरे
सहायक कुलसचिव

नव चेतना

यह क्षण है आनन्द का,
यह पल है विश्राम का।
नव चेतना नव प्रेरणा,
के साथ उत्साह से।

फिर आज एक आरम्भ का,
सृजन का सन्धान कर।
फिर आज भ्रम को तोड़ दे,
भंवर मन के छोड़ दे।।

उठ आज ऐसे ऐ प्रिय,
नव गमन पर हम कुछ यू चलें,
हो नवल किसलय प्रस्फुटन,
जैसे शिशु का हो रूदन।

तेरी धरोहर युद्ध है,
क्यूँ सोचता शर–चाप ले
फिर आज तू सन्धान कर,
गाण्डीव की झनकार कर।

ललकार कर निज तेज को
प्रारब्ध का प्रारम्भ कर,
आँखें झुकाये क्यूँ खड़ा,
तू युद्ध का आरम्भ कर।।

अमित खरे
सहायक कुलसचिव

हम महानता के सबसे करीब तब होते हैं जब हम विनम्रता में महान होते हैं...
रवीन्द्रनाथ टैगोर

जिंदगी की संजीवनी

उस शाख पे जब, हलचल सी हुई,
मेरी बिटिया खुशी से उछल पड़ी।
था जिसका उसे बड़ी देर से इंतजार,
वो कोयल आखिर आ ही गई।

देखकर उसकी सुंदर मुस्कान,
इस मुरझाए मन में आस जगी।
उस नन्हे दिल ने सिखा दिया,
खुशी की ना ढूँढें वजह बड़ी।

हम चाहते हैं खुश रहना पर,
तकलीफें गिनते रहतें हैं।
बाँटा जा सकता है फिर भी,
दर्द अपने खुद ही सहते हैं।

अक्सर एक तन्हाई छाती है,
सैलाब उमड़ सा आता है।
क्या होगा आगे जीवन में,
बस ख़याल यही सताता है।

जो साथ में है, जो पास में है,
उसको, उनको तो समेट रखो।
सब होगा, वो सब देगा भी,
बस उसपर पल भर विश्वास रखो।

जो दूर रहकर भी पास रहें,
उनकी यादों में बसा करो।
जो जिंदगी की आस रहें,
उनसे ना यूँ तुम ख़फा रहो।

कुछ बंद दरवाज़ों पर भी कभी,
दस्तक अचानक दिया करो।
छोटे बड़े जो भी पल हैं,
जिंदादिली से जिया करो।

गम हम से तो बलवान नही,
समय उसे मिटा देगा।
हर वक्त बदल ही जाता है,
बस धैर्य ही साथ सदा देगा।

मुस्कुराया करो, ये याद रखो,
मुस्कान आपकी है संजीवनी।
उसपे जीतें हैं रिश्ते कई,
उससे अलंकृत ये जिंदगी।

निशा नायर
लेखापाल

हौंसला

होकर यूँ उदास, न रूको तुम,
ऊगते सूरज की तरह बढ़ो तुम।
बढ़ते हुए मंजिल की ओर, न थको तुम,
आहिस्ता–आहिस्ता ही सही पर आगे बढ़ो तुम।।
एक दिन चला था मैं अपनी मंजिल की ओर,
आहिस्ता आहिस्ता ही सही पर आगे बढ़ रहा हूं मैं।
है मन में यह विश्वास अडिग अपनी मंजिल पाऊंगा मैं,
अपनों के विश्वास से सपनों को सजाऊंगा मैं।।
हार मानकर अगर रूक जाओगे,
फिर सुनहरे ख्वाब कैसे पाओगे।
आशीष अपनों का मिले इस मोड़ पर
हर मंजिल को करीब पाओगे।।

सौरभ कश्यप
कनिष्ठ सहायक

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

हवाएँ

क्या कहती हैं ये हवाऐं, सुनो तो ज़रा,
देती हैं ये क्या सदाऐं, सुनो तो ज़रा।
खनक इनकी खामोशी से कानों में,
ना जाने क्या क्या गुनगुनाए सुनो तो ज़रा।

गीली मिट्टी की महक उड़ाए, ये हवाऐं,
फूलों की खुशबु बिखराए, ये हवाऐं।
जुल्फों की सवारे घटाऐं, ये हवाऐं,
मेरी खिड़की तक मुझे खींच लाए, ये हवायें।

गरमी में शीतल एहसास दे जाए, ये हवायें,
आग की तपिश और भड़काए, ये हवायें।
पतझड़ में पेड़ों से पत्ते गिराए, ये हवायें,
छत पर डले कपड़ों को सुखाए, ये हवायें।

बारिश में छाते उड़ा ले जाए, ये हवायें,
ठहरे हुए पानी में तूफान ले आए, ये हवायें।
कश्तियों को सागर पार ले जायें, ये हवाये,
बादलों को छोड़–छोड़ जायें, ये हवायें।

बिन परों के उड़ती रहती हैं ये,
ना ठहरती ना कहीं भी रहती हैं ये।
उड़ती रहती है ये इधर उधर
ये हवायें, ये हवायें, ये हवायें।

स्वपनिल लौवंशी
कनिष्ठ सहायक

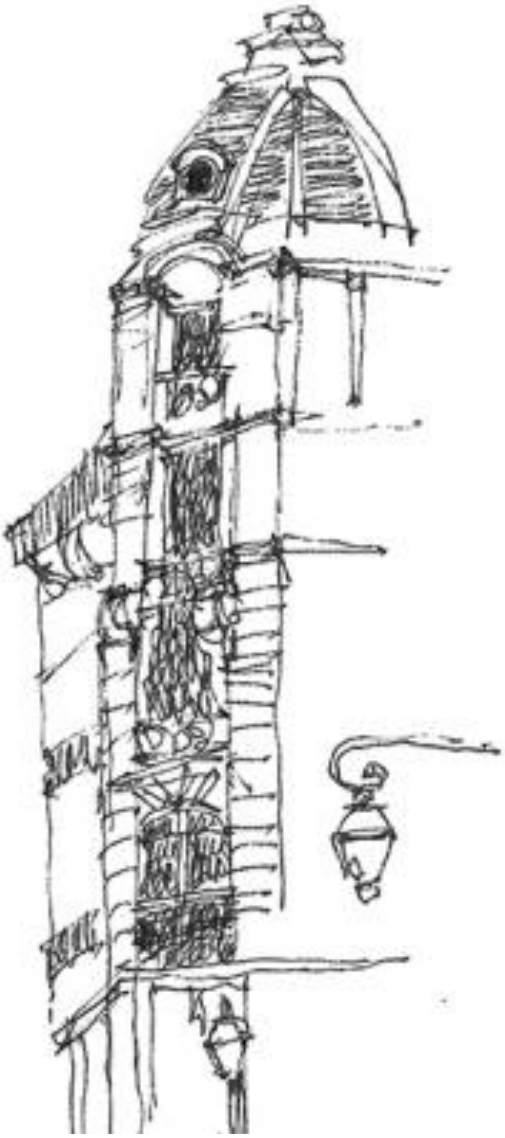

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

हिंदी

कितनी प्यारी, कितनी न्यारी,
हिंदी हिंदुस्तान की।
जन–जन की ये भाषा अपनी,
आन–बान और शान की।।
हिंदी के बल पर हमने भारत को,
एक सूत्र में बाँधा है।
अलग–अलग फूलों की माला में,
हिंदी ऐसा धागा है।।

अज्ञानता को दूर भगाती,
हिंदी ज्योति है ज्ञान की।
जन–जन की ये भाषा अपनी,
आन–बान और शान की।।
भाषाएँ अनगिनत हमारी,
हिंदी सबकी दीदी है।
बहनों से क्या झगड़ा इसका
बहनें इसकी पूँजी हैं।।

प्यार बाँटती, मेल कराती,
भूखी है सम्मान की।
जन–जन की ये भाषा अपनी,
आन–बान और शान की।।

अनुग्रह नगाइच
सहायक प्राध्यापक

एक पगडंडी सड़क हो गई

एक छोटी सी पगडंडी इठलाती हिचकोले खाती,
गुमनाम सी अनंत तक चलती थी।
किनारे पर झूलते पत्ते मंदिर की घंटियों समान छू जाती थी।
टहनियों के जाल में छुपे हुए घोंसलों से, चीं–चीं आवाजें आती थी।

मोटर जो कभी धूल उड़ाती तो टहनियाँ ही उसे साफ कर देती थीं।
एक छोटी सी अनंत सी पगडंडी में एक दुनिया ही समाई हुई थी।
फिर कुछ बदला इंसानों का एक झुंड आया,
कुछ पढ़ा लिखा कुछ अनपढ़ सा
हलचल हुई पेड़ कटे, घोंसेले हटे, वो पगडंडी कुछ बड़ी हो गई।

कुछ खुदा, कुछ भरा, आना जाना शुरू हुआ,
कुछ धूल उड़ी फिर कुछ और उड़ी
कण–कण से गुबार बना, गुबार उड़ा, दूर तक उड़ा, दफ्तर पहुँचा, शोर हुआ।

फिर कुछ बदला मशीनें आई, सफेद चमचमाता बना रास्ता।
फिर सब शांत हो गया, आज फिर पानी बरसा, दूर नई पत्तियाँ निकली
दूर नए घोंसले बने,घोंसलों से कभी–कभी चीं–चीं आवाजें आती हैं
अब पत्तियों की घंटियां दूर हैं, चिड़ियों की आवाजें दूर हैं
अब सड़क से दूर है,

गाड़ियों की कतार हो गई, पगडंडी अब सड़क हो गई
गुमनाम सी पगडंडी अब मशहूर हो गई।
वो दुनिया अब सड़क से दूर है।

रमेश पी. भोले
सहायक प्राध्यापक

वृक्ष–प्राण दाता

हर इंसान प्रतिदिन 3 सिलेंडरों के आसपास प्राण वायु (ऑक्सीजन) की श्वास लेता है। प्रत्येक ऑक्सीजन सिलेंडर की दर रु.700/– है। तीन सिलेंडर के लिए यह रु.2,100/– है, तदनुसार, हर साल अगर प्राण वायु का क्रय किया जाये तो इसकी लागत रु.7,66,000/– प्रतिवर्ष होगी। यदि मनुष्य के जीवन काल को 65 वर्ष माना जाता है, तो 5 करोड़ रुपये प्राण वायु खरीदने के लिए व्यय होंगे। लेकिन, हम वृक्षों से इस बहुमूल्य प्राण वायु (ऑक्सीजन) को मुफ्त में प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए, हम वृक्षों को काटेंगे नहीं और आज ही पौधा लगायेंगे।

सिस्टा श्रीनिवास राव
निज सहायक

एक नगरी नगर से दूर

विद्या अर्जन का स्वप्न लिए हम (एस पी ए) भोपाल
की ओर हो लिए,
आते ही आभास हुआ ये हम कहाँ हो लिए,
नगर से दूर एक नगरी बसाने के लिए।

यहाँ गुरु है ज्ञान है मान है अभिमान है,
मित्र सी पुस्तकें है पुस्तकों का अम्बार है,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

योजनायें हैं परियोजनायें है,
सीखने की लगन है तो उसे बढ़ाने के लिए,
नित नए आयाम हैं,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

परिसर इसका विस्तृत है बस छोटी सी वास्तु है,
वन्य जीवन का विचरण है प्रकृति का आनंद है,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

यहाँ सभी को दोस्त मिले किसी को जीवन साथी भी,
जीवन के यौवन का हर पहलू जगाने के लिए,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

बीहू हो गरबा हो लोढ़ी हो या बैसाखी,
ओणम उगादी गुडी पडवा, होली हो या दिवाली,
सभी उत्सवों के आनंद का समागम है,
बस इतना ही काफी है एक नगरी बसाने के लिए।

विद्या अर्जन का स्वप्न लिए हम (एस पी ए)
भोपाल की ओर हो लिए,
अब हमें यह भान, हम सही हो लिए,
क्योंकि, बस इतना ही काफी है,
एक नगरी बसाने के लिए।

डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर
सहायक प्राध्यापक

वीर

है वजन जमीन में, बढ़ रहा है काफिला,
लाल रंग में सना, हौंसलो को चीरता।
न रूक तू कभी अटकलों को देखकर,
बढ़ आगे तू बढ़, दुश्मनों को भेदकर।।

रंग जा धरा के रंग में, किसी की न परवाह कर,
तेरी नोक पर है सब, सबका तू हिसाब कर।
छा गया तम घना एक तेरी ललकार पर,
खलबली सी मचगई एक तेरी हुंकार पर।।

तेरा ललाट देखकर सूर्य रहा है चमक,
खुशियाँ ओढ़े है नदी, प्रकृति हो रही है भ्रमक।
तेरी सीमा पर है हरियाली, घर–घर में है खुशहाली,
तेरे इंतजार में किसी के अंश्रु जाते है छलक।।

बढ़ आगे तू बढ़, लक्ष्य से न भटक कभी,
रेंगते दिखें सर, कांप रही हो जमीं।

रक्त की बौछार हो, गद्दारों की हार हो,
घुसना, छिपना भूल जायें इस तरह प्रहार हो।

सदियों सदियों तक याद रखें वो,
तू इस तरह संहार कर।
मातृ भूमि के लिए वक्त पड़े तो,
तू स्वयं का भी बलिदान कर।।

सुनील कुमार जायसवाल
हिन्दी सहायक

पानी का हौसला

ए बहते हुए पानी
तू मेरे साथ भी रहते जा,
तू पहाड़ों से गिर कर,
समतल में बहते जा,
पर मेरे दिल से हो कर,
तू कुछ कहानियां भी कहते जा।

एक पत्थर से उतर कर,
दूसरे पे गिरना,
और दूसरे से उतर कर तीसरे पे बहना,
ऐसी क्या बेचैनी है तुझे समतल में रहने की,
की तू छोड़ता नहीं जिद कभी,
हर जंगल से बहने की।

किससे मिलना है तुझे,
ऐसा क्या करना है,
की हर पल बिता देता है तू,
उस एक सपने की चाह में
तेरी दहाड़ती हुई चाल से
सहम सा जाता हूं मै,
इतना हौसला?
थोड़ा जम सा जाता हूं मैं।

क्यों मै नहीं होता बेचैन इतना,
अपने मंजिल की चाह में,
ये मदहोशी क्यों नहीं होती,
मेरे मंजिल की राह में,

ऐसा क्या है तेरे मंजिल में तेरे राहों में,
क्यों दहाड़ता है तू, हर बढ़ते हुए पाओं में

बस ये बताते जा तू मुझे,
तेरे रास्ते में आया हूं मैं,
तेरे हौसलों के हर किस्सों के वास्ते आया हूं मैं।

अभिषेक गुप्ता
पंचम वर्ष, वास्तुकला

कुछ नहीं

कुछ नहीं है लिखने को,
फिर भी कुछ लिख रहा हूं।
कुछ नहीं से भी,
मैं कुछ तो सीख रहा हूं।

अकेले बैठा हूं,
और बहुत शांत दिख रहा हूं,
पर मन के किसी अंधेरे कोने में,
मैं बहुत जोर जोर से चीख रहा हूं।

एक धागा है, अधूरे एहसासों का,
उसमें रोज अपने शब्द पिरोता हूं,
इस अहसास के पूर्णता की चाह में,
हर रोज मै खुद में खुद को भिगोता हूं।

कुछ तो ढूंढ़ रहा हूं मैं,
यह पता नहीं– क्या?
पर हां, उसे ढूंढ़ते हुए,
मैं हर रोज कुछ नया संजोता हूं।

समंदर मुझ में है और मोती भी मुझ में है,
ये अहसास, और उसे पूरा करने की ज्योति
भी मुझ में है।
और कुछ भी नहीं है तो क्या हुआ,
उसे भी लिखने की,
और उससे सीखने की,
कसौटी मुझ में है।

अभिषेक गुप्ता
पंचम वर्ष, वास्तुकला

कामना है

कामना है तुम्हारे लिए ही मरूं,
और तुम्हारे लिए ही मैं जीता रहूं ।
प्रीति की वारुणी भर के दृग सिंधु से,
युग युगों तक मदिर मधु पीता रहूं ।

साँस की बाँसुरी थम रही है सजन,
है व्यर्थ लग रही अब मिलन की घड़ी ।
शोक विह्वल हुई जा रही है पवन,
प्रिया मलय गंध की सुखती फुलझड़ी ।
तुम लुटाओगे मोती जो मुस्कान के,
फिर भिखारी सा क्यों मैं ही रोता रहूं ।

जल गये पंख सूरज से मिलन न सके,
हम उजालों मे ही तम से घिरते गये ।
पुष्प की चाह पथ मे लिए ही रहे,
शूल ही शूल दिखते बिखरते नये ।
स्व की अनुभूति, दुख दग्ध मरूभूमि सी,
सिंधु से जो मिलूं बन के सरिता बहूं ।

उर्मियों मे फँसे, आँधियाँ चल पड़ी,
कूल पर मोतियों की तिज़ारत मिली ।
स्वर्ण कुमकुम नही चाहिए रॅच भर,
आप मुस्कान की बस खिलाओ कली ।
मधुबनी की बनो तुम जो कुसुमित लता,
भृंग बनकर सदा गाता कविता रहूं ।
कूल से दूर हो और गहरा गया,

डूबकर हम नयन सिंधु मे खो चले ।
साँस पर साँस बन प्राण की आहुति,
हम जलज प्यार के नीर मे बो चले ।
अश्रुओं मे बसो धार गंगा बने,
जो नयन मे बसो, नेह की माधुरी ।

तुम अँधेरो मे हो, एक जलता दिया,
प्रात बेला मे हो पुष्प की पांखुरी ।
चाँदनी तुम बनो जो धरा के लिए,
चाँद बन मैं गगन पर चमकता रहूं ।

साधना व्यर्थ होती नही है कभी,
चल के मंजिल मिलेगी यही आसरा ।
सूख जाएँगे ये अश्रु अविरल बहे,
बाद पतझड़ के आता है मधुबन हरा ।
तुम धड़कती हुई उर की ज्वाला बनो,
हर जनम मे शलभ बन के जलता रहूं ।

अनुराग उपाध्याय
पंचम वर्ष, वास्तुकला

नारी

भारत की नारी तू संघर्षों में जीती है।
दिन रात तपन सहती, तब कुंदन बन पाती है।
भारत की नारी तू संघर्षो में जीती है।

नाग कुंठाओं में बढ़ती विष की बूंदे पीती है।
विषधर को गले लगाती तब चन्दन बन पाती है।
भारत की नारी तू संघर्षों में जीती है।

प्रांशी जैन
पूर्व छात्र (एम.आर्क संरक्षण)

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

किरदार

ये दुनिया एक नाटक है,
और हम सब एक किरदार में हैं।
नौटंकी अच्छी करते हैं
जो भी इस संसार में हैं,
जीवन इसकी कहानी है
थोड़ी नयी पुरानी है,
कोई नंगा घूमता है
और कोई राजा–रानी है,
यहाँ किसी की जेब है भरी हुई
और कोई रोटी की दरकार में है,
ये दुनिया एक नाटक है ,
और हम सब एक किरदार में हैं।
निर्देशक ऊपरवाला है
उसका ही सारा झमेला है,
इस नौटंकी को करने को
उसने ही किरदार में डाला है,
और इस नाटक की कहानी भी
उसके ही अधिकार में है,
ये दुनिया एक नाटक है
और हम सब एक किरदार में हैं।
ये किरदार बड़े निराले हैं,
कुछ गोरे हैं कुछ काले हैं,
कुछ अमीर गरीब भी होते हैं,
कुछ हिन्दू मुस्लिम वाले हैं,
कुछ भाषण देते फिरते हैं ,
और कुछ बैठे सरकार में हैं,
ये दुनिया एक नाटक है ,
और हम सब एक किरदार में हैं।

आदर्श रस्तोगी
चतुर्थ वर्ष, वास्तुकला

रूप मती

मांडवगढ़ के पूर्व शिखर पर,
आज भी बेजान खड़ा हूं।
प्रेम की उस दुखद कथा का
एक छोटा अवशेष पड़ा हूं।

वक़्त कुछ थम सा गया है,
तुम्हारी यादों में रम सा गया है,
सही ही कहा है, 'रूपमती'!
तुम्हारे मधुर स्वरों की गूंज
खुद में कहीं ढूंढ रहा हूं।

तेरा हवा संग वो बतलाना,
कदमों में यूं तेज़ी लाना,
बाज़, झलक को तेरी आतुर,
अस्तित्व तेरा अनंत सा था,
काली नज़र ने तीर जो छोड़ा,
और शरमा के मुझमें कहीं
चुपके से फिर गुम हो जाना।

अंत हुआ पर अंत ना था,
अस्तित्व तेरा अनंत सा था,
काली नज़र ने तीर जो छोड़ा,
प्रेम लिप्त कर घायल पंछी,
समा गया कहीं वो मुझमें
तुम क्या जानो, नींव वो मेरी,
ऊंच कहीं संजीव घनेरी।
दूर क्षितिज तुझे याद है करता,
अकुलती रेवा की धारा,
सूनेपन की इस विरहा में,
ढूंढ रहा तेरा दीवाना।

मेघना
बी. आर्क (तृतीय वर्ष)

जिंदगी की किताब

जिंदगी की किताब के पन्ने भरते जा रहे हैं।
कभी दुःख के कांटे तो कभी खुशियों के फूल खिलते जा रहे हैं।।
इक ऐसे मोड़ पर खड़ी है आज ये जिंदगी,
कि वजह ना होने पर भी बस जीते जा रहे हैं।।
कुछ पराये जुड़ते तो कुछ अपने पिछड़ते जा रहे हैं।
जीवन की भागदौड़ में हम कुछ गुमते जा रहे हैं।।
समझ लिया करते थे कभी किसी की खामोशी भी,
आज अपने दिल की आवाज भी नजर अंदाज करते जा रहे हैं।
कल को मुक्कम्मल करने की धुन में काम करते जा रहे हैं।
आज के हसीं पलों का भी कत्ल किये जा रहे हैं।।
कभी निकाल लिया करते थे किसी पराये के लिए भी वक्त,
पर अफसोस आज खुद के लिए एक पल भी जुटा नहीं पा रहे।।
जो बीत गयी वो घड़ी वापस नहीं आएगी।
पर आज की हर छोटी बात आपको बरसों की याद दे जाएगी।।
इसलिए आज का हर पल जिंदादिली से जी लो यारों,
क्यूँकि पता भी नहीं चलेगा और ये किताब भर जाएगी।।

भगवान सिंह मुखरैया, एम.प्लान, यूआरपी

आर या पार

कहते हैं खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं
एक वही तो चीज़ है जिससे दूरियाँ मिटती हैं।
गुफ़्तगू ही काफी थी खुशियाँ मनाने के लिए,
अब तो गनीमत है अगर तवज्जौ भी कोई दे।
क्या हसीन थी वह पुरानी ज़िंदगानी,
लुक्का–छिपि, पिट्ठू और ठेठ राजा–रानी की कहानी।
सादगी से भरा व शांत सा था रहन सहन,
जब थी पक्की यारी–दोस्ती और न था कोई अहम्।
खुशनसीब थे, देखने मिला ऐसा भी अध्याय,
अब क्या पता ज़िंदगी में ऐसा किस्सा कब ही आए।
वर्तमान काल तो है इस पाठ से मुख़लिफ़,
दिल से किसी के सामने मुस्कुराना भी अब बन गई है साज़िश।
अब तो फोन ही है इकलौता संचार,
जब करना हो सोच–विचार।
अब सोचना पड़ेगा कौन है इस असामाजिकता का ज़िम्मेदार,
न जाने अब क्या बदलाव रखे हैं ज़िंदगी के पन्नों के उस पार।

धारणा डैंग, तृतीय वर्ष, बी. प्लान

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

जागरूकता

जब आप मेरे सामने आ जाते हैं न,
मुझे आपको हाय–बाय कहते हुए।
क्या आपको इतना टाइम भी नहीं मिला,
जिसमें आप मेरे को हाय–बाय कह सकें।

जब आप मेरे सामने से जाते हैं न,
टीर्शट के ऊपर शर्ट पहन के और उसके ऊपर स्वेटर
क्या मैं आपको दिखाई नहीं देता हूं वहां नंगे बैठे हुए।
या आपके पास इतने भी ज्यादा कपड़े नहीं है।
जिससे मैं ठंड से बच सकूं।

जब आप मेरे सामने से जाते हैं न
पिज्जा बर्गर खाते हुए,
क्या आपको मैं दिखाई नहीं देता हूं।
छोटी बहन के साथ खाली पेट सोते हुए।

जब आप मेरे सामने से जाते हैं न कार में बैठ के
क्या मैं आपको दिखाई नहीं देता हूं नंगे पैर चलते हुए।

जब आप मेरे सामने से जाते हैं न
अपने मम्मी के साथ
कभी ये सोचा है कि मेरी जिन्दगी कैसी होगी
बिना मेरी मम्मी के।

जब आप मेरे सामने से जाते हैं न
अखबार में किसान की आत्महत्या के बारे में पढ़ते हुए
क्या आपको में दिखाई नहीं देता हूं।
वहाँ अनार–अँगूर बेंचते हुए।

जब आप मेरे सामने से जाते हैं न।
मुझे भीख मांगते देखते हुए।
क्या आपको मैं दिखाई नहीं देता हूं,
या आप भी अंधे हैं, जैसे कि मैं हूं।

वेंकटेश मुद्दसनी
द्वितीय वर्ष (बी.प्लान)

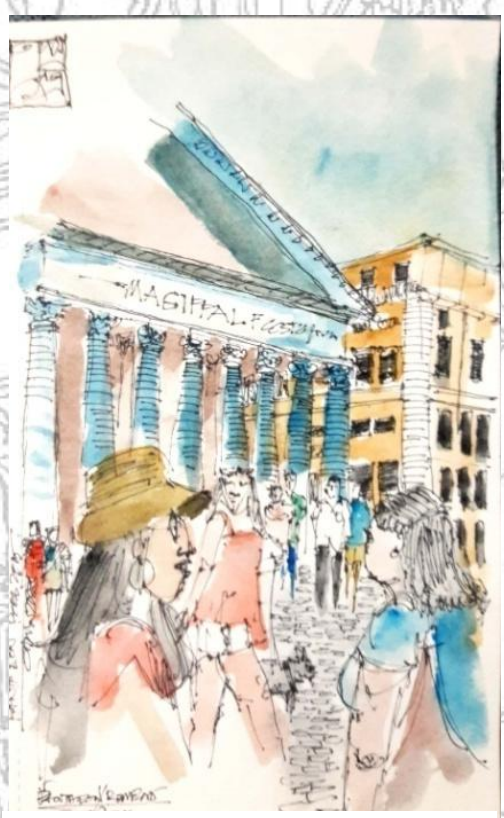

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

नवनिर्माण

आओ नवनिर्माण करें।

राग द्वेष से रहित जगत हो,
प्रेम भावना सहित जगत हो।
ऐसा सब अभिमान करें।
आओ नवनिर्माण करें...

जाति–वाद के बंधन तोड़ो,
मानवता से नाता जोड़ो,
संस्कारों के बीज रोप के,
कोलाहल में नव संचार करें।
आओ नवनिर्माण करें...

पंचभूत को पावन करके,
जनमानस को जागृत करके,
धरा का नवश्रृंगार करें।
आओ नवनिर्माण करें...

विश्वशांति का पाठ याद कर,
वेदों का अब ज्ञान जानकर,
''वसुधैव कुटुम्बकम'' की वाणी को,
विश्व में गुजायमान करें।
आओ नवनिर्माण करें...

आओ नवनिर्माण करें।।

आनंद किशोर सिंह
अनुभाग अधिकारी

एक सोच

जो बैचेन होना है तुम्हे,
तो पत्थर से टकराती इन नदी की
लहरों की तरह होना,

इतना बैचेन की तेरे ज़हन की
चीख तेरी मंजिल तक को सुनाई दे,

इतना मदमस्त की रास्ते की हर ठोकर
तुझे अपनी मंज़िल का हिस्सा दिखाई
दे।

तू उन मौजों में बहना ...
तू उन मौज़ों में बहना जो हो तेरी
जुबां पर ख़ामोश
पर हर ज़र्रे को सुनाई दे।

अभिषेक गुप्ता
पंचम वर्ष, वास्तुकला

ऐतबार

जिंदगी में ऐतबार का होना जरूरी है,
रात के बाद सुबह का होना जरूरी है,
पतझड़ के बाद बसंत का होना जरूरी है,
ज़िंदगी में ऐतबार का होना ज़रूरी है।

बारिश के ऐतबार पर बोता वो बीज़ है,
क्यूं न करे वो ऐतबार ये भी अज़ीब है,
कुछ वक्त बाद
उसे यह बात सुकून दिलाती है,
जब खलिहानों में खड़ी फसलें लहलहाती
हैं।

पेड़ों में जड़ों का होना जरूरी है
ज़िंदगी में ऐतबार का होना ज़रूरी है।

जिंदगी में ऐतबार का होना जरूरी है....

आनंद किशोर सिंह
अनुभाग अधिकारी

स्वरचित लेख व यात्रा वर्णन

इत्र की नगरी कन्नौज

कन्नौज शहर इत्र के लिए भारत ही नहीं वरन पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। कन्नौज ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह शहर गंगा नदी के किनारे बसा हुआ हैं यह कन्नौज के राजा जयचन्द की राजधानी भी रह चुका है। कन्नौज के आस–पास रहने वाले लोग अधिकतर कृषि उत्पादन पर ही निर्भर हैं तथा इन के व्यवसाय से जुड़े हैं। यहां की भौगोलिक स्थिति फूलों की खेती करने के लिए सर्वोत्तम है। इसीलिए यहां इत्र व्यवसाय प्रारम्भ से चला आ रहा है।

इत्र बनाने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इत्र को कई नामों से भी जाना जाता है– अत्तर, इतिर, सुगन्ध, परफ्यूम इत्यादि। ऐसा माना जाता है कि 'इत्र' शब्द की उत्पत्ति फारसी शब्द 'इतिर' से हुई है, जिसका मतलब सुगन्ध होता है। इत्र का इतिहास हजारों–लाखों वर्ष पुराना रहा है। सर्वप्रथम इत्र बनाने की विधि का निष्पादन 'मिस्त्र' देश में हुआ था। इत्र बनाने की परम्परा 5000 वर्ष पुरानी है। इसके साक्ष्य की पुष्टि हड़प्पा और मोहनजोदारों की खुदाई से प्राप्त अवशेषों से होती है। सर्वप्रथम इत्र का उपयोग फूलों से बना इत्र व सुगन्धित जल पूजा में प्रयोग किया करते थे। तत्पश्चात इन विभिन्न कार्यों में समय के अनुसार प्रयोग होने लगा। विश्वभर में इत्र, अपने प्राचीन विधि से बनाने के लिए 6 देश प्रसिद्ध हैं, वे इस प्रकार हैं– इंग्लैण्ड (पुराना), रोम, एसाइरिया, प्राचीन मिस्त्र, फारस और भारत।

इत्र के व्यवसाय का औद्योगिकीकरण 16वीं शताब्दी में हो चुका था। सबसे ज्यादा इत्र का उपयोग सूखे और गर्म प्रदेशों में आज भी होता है क्योंकि कुछ प्रकार के इत्र शरीर को ठण्डक प्रदान करते हैं तथा कुछ प्रकार के इत्र शरीर को गर्माहट प्रदान करते हैं।

भारत के कन्नौज शहर में इत्र व्यवसाय सर्वप्रथम मुगलकाल से प्रकाश में आया। यद्यपि इत्र बनाने का व्यवसाय गुप्तकाल से प्रारम्भ हो चुका था। कन्नौज शहर पारम्परिक विधि से इत्र बनाने के लिए प्रसिद्ध है और यह परम्परा आज भी कायम है। प्राचीन समय में इत्र का व्यापार गंगा नदी द्वारा किया जाता था तथा कोलकाता में स्थित बन्दरगाह से इत्र भारत से दूसरे देशों में स्थानान्तरित किया जाता था। इत्र की बढ़ती लोकप्रियता के कारण, मुगलकाल में इत्र से सम्बन्धित व्यवसाय की देख रेख के लिए शाहजॉह ने 'खुशबू–दरोगा' के नाम से एक पद न्युक्त किया था।

इत्र बनाने की दो प्राचीन पद्धतियाँ है प्रथम पद्धति 'डेग–भपका विधि' (Hydro distillation Method) एवं द्वितीय पद्धति 'नख छोया विधि' के नाम से जाने जाते हैं। ये विधियाँ आसवन विधि द्वारा की जाती है।

आज बदलते समय के अनुसार, इत्र–व्यवसाय की प्राचीन एवं पारम्परिक पद्धति खतरे में है। क्योंकि अब पारम्परिक तरीके से इत्र बनाकर बेंचना धीरे–धीरे लुप्त होता जा रहा है। अधिक धन कमाने के लिए इत्र व्यवसायी मशीनों से इत्र बनाने पर ज्यादा जोर दे रहे हैं, जिससे इत्र बनाने की पारम्परिक विधि लुप्त होने की कगार पर पहुंच चुकी है।

डॉ.विशाखा कवठेकर
सहायक प्राध्यापक
चंद्र प्रभा, छात्रा

जीवन की संपूर्णता

जीवन का एक विशिष्ट अर्थ है। एक क्षण वह भी होगा जब हम मुठ्ठीभर भस्म में बदल जाएँगे, परंतु जब तक हम जीवित हैं, यह समझें कि हम अमर हैं। जीवन की यही संपूर्णता है।

एक संपूर्ण जीवन में कुछ प्रतिबद्धताएँ होती हैं तो कुछ विवशताएँ भी होती हैं। जो डगमगाता ही रहे, तनकर खड़ा भी न हो सके वह आधारहीन जीवन आस्थाहीन भी होता है। जो दृढ़ है, स्तंभवत अडिग है, वह संवेदनहीन जीवन हरीतिमाहीन और नीरस है। जीवन जो आंदोलित होता है, स्पंदित होता है, उसी में सुरभित पुष्प और माधुर्ययुक्त फल लगते हैं। इसी फल के बीज पुनः धरा को धनवान बनाते हैं। ऐसे ही संपूर्ण जीवन की कल्पना की थी भारत की मनीषियों ने, कामना की थी देवों ने और आविर्भाव हुआ था भरत का, चंद्रगुप्त का, विवेकानंद का, जो मन से क्रांतिदर्शी तथा कर्म से क्रांतिकारी थे। इन्होंने भारत का पुनरूद्धार किया था। भारत का तेज अभिनंदित हुआ था। भारत के जन–जन की निरीहता का युग समाप्त हुआ और राष्ट्र का आत्मविश्वास जगा था। यह क्रांति का परिणाम था। संपूर्ण जन–जीवन में भीरूता नष्ट हुई और संघर्षशीलता का संकल्प उदीयमान हुआ। यही सुदृढ़ संघर्षशीलता ही क्रांति का उपहार थी जो पौरूषवान पीढ़ी के रूप में अवतरित हुई, जिसने संघर्ष में सुख का अनुभव किया।

संपूर्णता का क्रांतिधर्मी जीवन जब अपनी उपलब्धियों के हिमालय पर खड़ा होकर पीछे छोड़ आए संघर्षों के घावों को देखता है, तब पुलकित होता है। क्योंकि उन्हीं घावों ने ही उपलब्धियों का सुमेरू जो खड़ा किया है। संपूर्णता का क्रांतिधर्मी जीवन जलते हुए उस दीपक के समान होता है, जो अपने नीचे अंधेरा रखकर अपने हिस्से का उजाला दूसरों में बाँट देता है कि उनका पथ आलोकित हो और वे भटकने की यंत्रणा से बचे रहें। क्रांतिधर्मी भरत, चंद्रगुप्त या विवेकानंद अपने युग के वसंत थे। वे आत्मविश्वास, आत्मगौरव और स्वाभिमान की सुरभि बाँटते थे। उन्होंने अपने वर्तमान को संवारा और भारत का भविष्य स्वयं दीप्तिमान हो उठा। उन्होंने धर्मभीरूओं की भाँति अगले जन्म को सार्थक करने के लिए वर्तमान की उपेक्षा करके भविष्य की पूजा नहीं की। उन्हें पूरा भरोसा था कि उपेक्षित वर्तमान ही अभिशप्त भविष्य बनाता है।

मनुष्य दोनों प्रकार के वर्तमान का निर्माण करता है– एक का भविष्य श्रद्धा करता है, दूसरे का भविष्य गाली देता है। कोई व्यक्ति ऐसा भी वर्तमान निर्मित करता है जिस पर भूत और भविष्य, दोनों गर्व करते हैं, और कोई ऐसा भी होता है, जिसके किए पर भूत, भविष्य और वर्तमान, तीनों लज्जित होते हैं। असलियत में भविष्य को पकड़ने का प्रयास करने पर वर्तमान भी गायब हो जाता है। जो वर्तमान को सीढ़ी की डाँड नहीं बनाता, वह भविष्य तक कैसे चढ़ सकेगा? वर्तमान को चाहिए कि वह अतीत से श्रद्धापूर्वक आशीर्वाद ले। अतीत उत्तराधिकार में उसे अपने सत्य, शिव और सुंदर, सब कुछ दे देगा। अतीत से संघर्ष करने पर वर्तमान विनाश का अभिशाप पाता है और भविष्य को शत्रुता के अहसास की धरोहर दे जाता है। अतीत में बोया गया बीज वर्तमान में वृक्ष के रूप में खड़ा होता है और भविष्य में इसमें फल लगते हैं। यदि अंधकार को दूर करने के लिए बीज रूप में एक दीप जलाया गया है तो उससे अनेक दिए जल उठेंगे। हवा के झोंके से जिन्हें भय होता हे, वे अंधेरे में ही जीते हैं।

जीवन की संपूर्णता का अध्याय कभी नहीं लिखा जाता। जीवन सतत् क्रियाशील परिपाटी है। संपूर्ण जीवन जीने वाला व्यक्ति कभी मरता नहीं, केवल शरीर से अलग हो जाता है। व्यक्ति के शरीर की हत्या की जा सकती है, उसके व्यक्तित्व की नहीं। शरीर का हत्यारा उतना गुनहगार नहीं होता, जितना व्यक्तित्व को क्षति पहुँचाने वाला।

अनुग्रह नगाइच, सहायक प्राध्यापक

आइये हम अपने आज का बलिदान कर दें ताकि हमारे बच्चों का कल बेहतर हो सके...
ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

मेरी लद्दाख–यात्रा

अंततः लम्बे इंतजार के बाद वह दिन आ ही गया जब हमने भोपाल से दिल्ली व दिल्ली से लेह के लिए उड़ान भरी, सुबह का वक्त था थकान की वजह से मुझे विमान में बैठते ही नींद आ गई। कुछ देर बाद अचानक मेरी नींद खुली तो मैने देखा कि हमारा विमान बहुत सारे पर्वतों के ऊपर बादलों के बीच से गुजर रहा था। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा और खिड़की से देखते हुए मैं प्रकृति के सौंदर्य में खोने लगी। मैंने अपने मोबाइल में उन मनोरम दृश्यों को कैद कर लेना चाहा। थोड़ी ही देर बाद हम लेह के 'रैनपोछे विमानतल' पर उतर गए। बाहर का तापमान 8 डिग्री सेल्सियस था परन्तु उक्सुकता–वश हमें ठंड या आक्सीजन की कमी का कोई एहसास नहीं हुआ। हम अपने पहले से ही बुक किए हुए होटल पहुँचे जहां पर कमरे में फर्श व छत दोनों पर लकड़ी का प्रयोग किया गया था व बड़ी सी खिड़की से पहाड़ों का सुन्दर दृश्य दिखाई देता था। दिन में धूप तेज थी, हमने दोपहर का खाना खाकर आराम किया।

शाम को हमसे बैठा न गया और हम निकल पड़े। दूर पहाड़ पर शान्ति स्तूप नजर आ रहा था। हम उस ओर चल दिए। करीब 2 किलोमीटर पैदल चलकर हम ऊपर शान्ति स्तूप तक पहुँचे। हमने ऊपर से लेह शहर के नैसर्गिक सौन्दर्य को निहारा। शाम अब ढलने को थी और ऊपर काफी ढण्ड थी। हमने वहीं स्थित कैन्टीन में मैगी व लद्दाखी चाय का लुत्फ उठाया और वापस होटल के लिए चल दिए। होटल पहुँचने पर समय 8.30 व तापमान 1 डिग्री सेल्सियस था जो कि करीब 10.30 बजे तक –3 डिग्री सेल्सियस हो चुका था।

सुबह जल्दी तैयार होकर, हम टैक्सी से निकल पड़े। आज हमें लेह स्थित जगहों पर जाना था। शहर में कई बौद्ध मठ हैं जिन्हें अंग्रेजी में मोनास्ट्री व लद्दाखी भाषा में 'गोम्पा' के नाम से जाना जाता है जिनमें से प्रमुख 'हेमिस गोम्पा' व 'ठीकसे गोम्पा' काफी खूबसूरती से बनाए गए हैं। सभी मठों में गौतम बुद्ध की विशाल मूर्तियाँ स्थापित हैं। जो दर्शनीय हैं। यहां हम 'शे पैलेस' व 'लेह पैलेस' भी गए जो वास्तव में किसी महल से कम न थे। इन सभी जगहों पर बड़ी–बड़ी प्रेयर व्हील्स भी लगी थी जिन्हें हमने भी शुभकामनाओं के साथ घुमाया। इसके बाद हम रैन्चो स्कूल गए जिसका वास्तविक नाम 'ड्रुक व्हाइट्स लोट्स स्कूल' है। यहाँ हमें मासूम लद्दाखी बच्चे बहुत ही प्यारे लगे। शाम चार बजे से पहले हम कलेक्टर ऑफिस से परमिट भी बनवाने के लिए गए तथा शाम ढलते–ढलते स्थानीय बाजार होते हुए वापस होटल आ गए।

अगले दिन सुबह–सुबह उस होटल को छोड़ कर पूरे सामान के साथ 'नुब्रा वैली' की तरफ निकल पड़े। यह रास्ता पहाड़ों के ऊपर से जाता है। पहाड़ों के बीच से एक नदी भी बह रही थी। जिसका नाम है 'श्योक नदी'। सब कुछ बहुत खूबसूरत था। करीब पांच घंटे का सफर तय करके हम खार्दुंगला शिखर पर पहुँचे जो कि हिमालय पर्वत का ही एक हिस्सा है और इसकी ऊँचाई 17582 फीट है। यह शिखर बर्फ से ढका हुआ था और हवा भी काफी ठण्डी चल रही थी। एकदम सफेद बर्फ मानों हमें शान्ति का संदेश दे रही थी। हम कुछ देर वहाँ ठहरे, हिम मानव भी बनाया और अपने अगले गंतव्य की ओर निकल पड़े।

अब हम पाकिस्तान सीमा से लगे हुए गाँव 'टुरटुक' की तरफ जा रहे थे। रास्ते भर आर्मी के कैम्प थे, जिन्हें देखकर ऐसा लगता था कि ये लोग हमारी सुरक्षा के लिए घर से दूर भयानक सर्दी को सहते

हुए, कितनी कठिन परिस्थितियों में रहते हैं। ये रास्ते कब गुजरते जा रहे थे, पता ही नहीं चला और हम 'टुरटुक' गांव से होते हुए भारत–पाकिस्तान सीमा पर पहुँच गए। हमें अपने परमिट व पहचान–पत्र भी दिखाने पड़े तभी वहाँ तैनात मराठा रेजीमेंट के आर्मी आफिसर ने हमें आगे जाने दिया। कुछ ही पलों में हम सीमा के इस पार थे व पाकिस्तान सीमा को देख सकते थे। एक सिपाही ने हमें अपनी दूरबीन से दूर पहाड़ पर लगे पाकिस्तान के झण्डे को दिखाया। हम अत्यंत रोमांचित थे। वहाँ से लौटकर हम 'नुब्रा वैली' में ही स्थित हुंडर नामक गाँव पहुँचे। यहाँ प्रतिदिन शाम को लोक कलाकार गीत गाते हुए नृत्य करते हैं। हमने मुग्ध होकर उनकी कला का आनंद उठाया, सराहनीय है कि आज भी लोक–कलाएँ जीवित हैं।

फिर अगले दिन सुबह हम 'नुब्रा वैली' में ही स्थित दर्शनीय स्थल जैसे 'रेत का टीला' व ऊँटों की सफारी देखने निकले। रेत के टीले के पास पहुँचकर हमने देखा, सफेद रेत के ऊपर भूरे–भूरे ऊँचे पहाड़ और उनके ऊपर बादलों का श्रृंगार किए हुए नीला आकाश यह भी एक मनोहारी दृश्य था। हम रेत पर चढकर टीले के ऊपर पहुंचे, बच्चे वहां खूब खेले। टीले से उतरकर कुछ ही दूर पर ऊँटों की सफारी दिखाई दे रही थी और बीच से श्योक नदी की एक नहर भी बह रही थी। नहर पार करके हम सफारी तक पहुंचे यहां के ऊँट राजस्थान के ऊँटों से भिन्न है। ये कम लंबे थे और इनके शरीर पर बड़े–बड़े बाल थे। हमारा अगला गंतव्य था 'डिस्किट मोनास्ट्री' यहा भगवान 'बुद्ध' की विशाल मूर्ति अन्य मठों की भांति अंदर न होकर खुले आकाश के नीचे अत्यंत शोभनीय है तथा ऊँचाई पर स्थित होने से पूरी 'नुब्रा वैली' का दृश्य भी अत्यंत सुन्दर है।

तत्पश्चात् हम पैंगोंग झील के लिए निकल पड़े जो कि वहाँ से करीब 165 कि.मी. दूरी पर स्थित है। पहाड़ों के घुमावदार रास्तों से होकर हम शाम तक पैगोंग झील पहुँचे। हिमालय के बीचों बीच स्थित यह झील 13940 फीट की ऊँचाई पर भारत से चीन तक फैली हैं। इसकी लंबाई 134 कि.मी. है तथा 60 प्रतिशत हिस्सा चीन में आता है। नमकीन पानी की झील होते हुए भी यह शीत ऋतु में पूरी तरह जम जाती है। इसका पानी बिलकुल नीला दिखाई देता है। इसलिए इसे 'नीले पानी' की झील भी कहा जाता है। यहाँ अत्यधिक ठण्ड थी और हवा में आक्सीजन की मात्रा भी कम थी, परन्तु झील की अवर्णनीय सुन्दरता को देखते हुए ये परेशानियाँ नगण्य हैं। झील के किनारे ही बने कॉटेज में रात्रि–विश्राम के बाद अगले दिन सुबह हम फिर से झील के किनारे पहुँच गए। ऊपर नीला आसमान, पहाड़ और फिर झील, सौंदर्य ऐसा कि मन ही न भरे, मानों हम किसी दूसरी ही दुनिया में हों और वास्तव में भी यह दुनिया हमारी दुनिया से बहुत अलग थी। एकदम शान्त एवं सुन्दर। विवशतः हम झील को छोड़कर फिर से पहाड़ी रास्तों से होकर 'चांगला शिखर' पर पहुँचे। हिमालय के इस शिखर की ऊँचाई 17586 फीट है। यहाँ एक चांगला बाबा का मंदिर भी है जिसमें लोग कहते है कि किसी आत्मा का वास है, परंतु हमें ऐसा कुछ भी अनुभव न हुआ।

यह चोटी भी बर्फ से पूरी तरह आच्छादित थी। बच्चे भी बर्फ से खेलकर अत्यंत आनंदित थे। हम फिर से लेह की तरफ बढ़े और शाम होते–होते पहुँच भी गए। बाजार के पास ही ठहरे ताकि कुछ खरीदारी भी कर सकें। अगले दिन हम लेह स्थित 'हॉल ऑफ फेम' नामक संग्रहालय गए। यह सेना से संबंधित अत्यंत खूबसूरत संग्रहालय है, जहाँ राइफल, मशीनगन तथा हैलीकॉप्टर, टेन्ट आदि जो भी वस्तुएं पहाड़ों पर –10 डिग्री या उससे कम तापमान पर सैनिकों द्वारा प्रयोग में लायी जाती हैं, को संग्रहीत किया गया है। यहां आना काफी ज्ञानवर्धक रहा। शाम को हमने स्थानीय बाजार से काफी वस्तुएँ खरीदीं

जैसे पश्मीना शाल, कश्मीरी व लद्दाखी आभूषण, अखरोट व कुछ धार्मिक वस्तुएँ। हमने लद्दाखी भाषा का शब्द 'जूले' भी सीखा, जिसका अर्थ है नमस्ते।

अंततः वह दिन भी आ गया जब हमें वापस लौटना था और अगले दिन हम लेह विमानतल आ गए, फिर दिल्ली व दिल्ली से भोपाल लौटकर भी हम अत्यंत प्रसन्न थे क्योंकि हम वहाँ से बहुत सारी खूबसूरत यादें संजो कर लाए थे। तो दोस्तों, यह थी मेरी लद्दाख यात्रा।

प्रतिभा सिंह जेना
बहुप्रवीणता सहायक

चतुर नगर – होशियार शहरः हिंदी, राष्ट्रवाद और स्मार्ट सिटी

केंद्र की राष्ट्रवादी सरकार हिंदी के विस्तार के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रही है। हिंदी भाषी लोग इसे हिंदी के पुनर्जीवन के लिए प्रयास मान रहे हैं और कुछ सरकारी तंत्र का अत्योपयोग। पर सितम्बर माह में ही क्यों हिन्दी के प्रति सक्रीयता दिखाई देती है।

मैंने अब पूर्णतः हिंदी में सोचना आरम्भ कर दिया है। हर दिवस, हिंदी मुझे गंगा जैसी लगती है जिसने मंदाकिनी और भागीरथी के समान समझकर विश्व के कई शब्दों को अपनाया है। उर्दू, संस्कृत और क्षेत्रीय बोलियों के खंडो के आगे भी इतिहास के पन्नो का अवलोकन करेंगे तो पाएँगे कि कई विदेशी शब्दों को हिंदी ने सहजता से अपनाया है। अब वह तुर्की का साबुन हो या अरबी की तस्वीर। तकनीक और संगणिकी शब्दों में तो अंग्रेजी शब्दों की ही भरमार है। डाटा, कम्प्यूटर, मोबाइल इत्यादि जैसे बहुत से शब्द है जिसका हिंदी–अनुवाद या हिंदी–सम प्रतियोगिताओं के प्रश्न पत्रों में ही पाया जाता है।

शब्दों में जादू तो है, रसोई और किचन एक दूसरे का अनुवाद हैं पर इनकी छवियाँ आपके मस्तिष्क में भिन्न दिखती हैं। कोई भी विदेशी शब्द अपने साथ केवल अपनी भाषा ही नहीं, अपनी संस्कृति भी लातीं है। यही कहानी है 'स्मार्ट' की।

कुछ ही दिन पहले, मैंने अपने छात्रों से पूछा, "कृपया स्मार्ट का हिंदी अनुवाद बताने का कष्ट करें"। किसी ने चतुर कहा, चालाक कहा, किसी ने होशियार। मजा नहीं आया अनुवाद सुनकर। अब भई स्मार्ट तो स्मार्ट ही होता है। हिंदी में अनुवाद करते ही एक शानदार अंग्रेजी बोलने वाला सूट–बूट पहना युवा अचानक सरसों का तेल लगाए, माँग से बराबर बाल काढ़े हुए छोटे शहर या गाँव से इंटरव्यू देने हेतु आश्वस्त–आकांक्षी लगने लगता है।

नगरीय विकास के विमर्श में 'स्मार्ट सिटी' एक तेजी से दौड़ते हुए सफेद घोड़े पर बैठा हुआ नौजवान दिख रहा है। यह ऐसा नौजवान है जो फारेन से पढ़ के आया है, अपने साथ कुछ तकनीकी यंत्र और मंत्र लेकर आया है। सबको लग रहा है की इसके तकनीकी यंत्र संसार की सारी समस्याएँ स्विच दबाते ही हल कर देंगे और मंत्रो के उच्चारण से सर्वव्यापी विकास हो जाएगा। योजनाकार और वास्तुविद, सांस्कृतिक राजनीति के युग में भी स्मार्ट सिटी के विदेशी छवियों से मंत्रमुग्ध हो गए हैं। भौतिकवादी विकास, उन्नति और प्रगति के वादों की गूँज में अपने जीवित पर मरणहाल नगरों की सिसकियाँ सुनाई

नहीं दे रही हैं। कोई स्मार्ट सिटी का प्रासंगिक अर्थ भी नहीं समझना चाहता। कोई भी अपनी स्वर्णिम नगरीय कल्प व योजनाओं से प्रेरणा नहीं लेना चाहता। और तो और कोई अपनी जेब भी टटोलना नहीं चाहता, अब भई ईएमआई और लोन का जमाना जो है।

स्मार्ट सिटी का एतिहासिक और वैश्विक विमर्श अपने आप में दिलचस्प है। जिस तरह से एक जुड़ा हुआ सघन शहर औद्योगिक क्रांति का उत्पाद था, ठीक उस ही तरह से स्मार्ट सिटी भी डिजिटल क्रांति का एक शहरी उत्पाद है। औद्योगिक क्रांति के नगरों का बुनियादी ढाँचा आधारिक संरचना थी, स्मार्ट सिटी संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के 'नरम' बुनियादी ढांचे पर सोचा जाता है। शायद इसलिए ही अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ की परिभाषा सबसे प्रसिद्ध है। "किसी भी पार्टी, समूह या व्यक्ति को उनके सिद्धांत या शहरी नियोजन के अभ्यास में योगदान के लिए पहचाने जाने के बजाय, स्मार्ट सिटी की धारणा पूरी समकालीन रूप में इन व्यवसायों के भीतर उत्पन्न होती है ....", अपनी किताब 'अगेन्स्ट द स्मार्ट सिटी' में यह कहना है एडम ग्रीन्फील्ड का। मैं इनके विचारों से सहमत हूँ। इसलिए नहीं की यह शगूफा चीन जैसे 'दुश्मन' देश से भी तकनीकी सामान का आयात करवा रहा है । पर यह सिमेंट और काँच बनाने वालों के सुनहरे भविष्य को सुनिश्चित कर रहा है और हमारे पर्यावरण के अंधकार को। यह कृत्रिम पदार्थ कितने सतत् हैं और धरती के लिए कितने सेहतमंद हैं, इस पर विचार ही नहीं हुआ है।

स्वतंत्रता के पश्चात भी आधुनिक सरकार ने राजनीतिक संसार में पैठ बनाने के लिए महात्मा गांधी के 'मेरे सपनों का भारत' वाले अभिकल्प की आहूति दे दी। उस आहूति में रविंद्रनाथ ठाकुर के कुछ वास्तुकला के स्वदेशी मॉडल भी थे। नेहरु ने पश्चिम के महान वास्तुविद, ली कोर्बूसियर, को बुला कर विश्वस्तरीय चंडीगढ़ बनवा दिया। बाद में यह चंडीगढ़ ही हमारी शहरी अभिकल्पनाओं का साँचा बन गया और इसकी इमारतें हमारे नए युग के ताज महल व लाल किला। नेहरु विदेश से पढ़े थे, अपने आधुनिक और स्वच्छंद विचारों के लिए जाने जाते थे। उनका आधुनिक वास्तुकला पर फिदा होना लाजमी है। पर वर्तमान में सांस्कृतिक विचारों की आधुनिकता के डोरों पर ढेर होना समझ नहीं आता।

भारत में स्मार्ट सिटी के बाजे ने सभी विरोधाभासी फुसफुसाहटों को अपने शोर से दबा दिया है। अपने देश में मानसून का मौसम सभी नगरीय सपनों को नालियों में जाम कर देता है। नागरिकों का सारा उत्साह सड़कों के गड्ढे भरने में पट जाता है।

पीएस: आन्ध्र से कुछ समाचार आया था कि मुख्यमंत्री जी अपनी नई राजधानी (स्मार्ट राजधानी) के स्वरूप के जनता की भावनाओं का आदर करेंगे। तभी उन्होंने दिग्गज वास्तुविद फूमिहको माकि का माडर्न अभिकल्प अस्वीकार कर दिया। अगले ही पल पता पड़ा की बाहुबली के निर्देशक को नया नगरीय–दर्शन बनाने के लिए निवेदन किया गया है और उसे स्मार्ट तरीके से बनाया जाएगा। वास्तव में, भारत में स्मार्ट सिटी के उगते सूरज ने सबकी आँखें बंद कर दी हैं।

सौरभ तिवारी
सहायक प्राध्यापक

राजारानी महल, चंदेरी

चंदेरी का राजारानी महल, ऐतिहासिक महलों और स्मारकों की दुनिया में आकर्षण का केन्द्र है। चंदेरी के हर महल में एक एतिहासिक कहानी छुपी हुई है। जो इन प्राचीन स्मारकों की खामोश दीवारों के भीतर स्थापित है।

पत्थर से तराशे हुए महल और हवेलियों के लिए प्रसिद्ध, चंदेरी में कुल 260 महल थे। आज हालांकि, इनमें से केवल 43 ही शेष हैं। इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (आईएनटीएसीएच) ने चंदेरी के दृष्टिकोण (संदर्भ फिगर 4.10) में 16 वीं शताब्दी में स्थापित राजारानी महल के बारे में उद्धित किया कि शहर में स्थित राजारानी महल के आंतरिक भाग वास्तव में दो अलग–अलग महलों से बना है। इस परियोजना का उद्देश्य मौजूदा महल के भवनों का नवीकरण बुनकर डिजाइन और प्रदर्शनी केंद्र के रूप में किया जाना है जो बुनकरों को स्वयं का डिजाइन बनाने में सक्षम बनायेगा।

डिजिटल सशक्तिकरण फाउंडेशन (डीईएफ) एक गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) है जो कंप्यूटर आधारित डिजाइनों पर ध्यान केंद्रित कर डिजाइन सेंटर चलाता है।

साभारः वर्नाकुलर सेटलमेंट इन चंदेरी, पुस्तक
योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

रेखा चित्र : साभार .... डॉ. आनंद वाडवेकर

चम्पारण सत्याग्रहः महात्मा गांधी

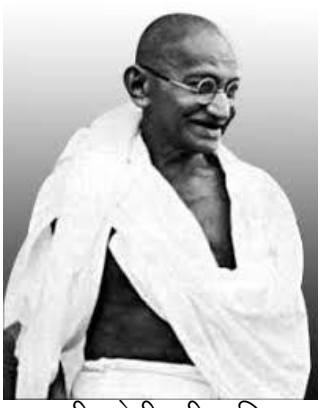

गांधीजी के नेतृत्व में बिहार के चम्पारण जिले में सन् १९१७–१८ में एक सत्याग्रह हुआ। इसे चम्पारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। गांधीजी के नेतृत्व में भारत में किया गया यह पहला सत्याग्रह था। उत्तर बिहार में नेपाल से सटे हुए चंपारण में नील की खेती की प्रथा थी। इस क्षेत्र में बागान मालिकों को जमीन की ठेकेदारी अंग्रेजों द्वारा दी गई थी. बागान मालिकों ने "तीन कठिया प्रणाली" लागू कर रखी थी। तीन कठिया प्रणाली के अनुसार हर किसान को अपनी खेती के लायक जमीन के 15 प्रतिशत भाग में नील की खेती करनी पड़ती थी। दरअसल नील नकदी फसल मानी जाती थी। नकदी अर्थात् जिसको बेचने से अच्छी–खासी आमदनी होती थी। किसान खुद के उगाये नील को बाहर नहीं बेच सकते थे। उन्हें बाजार मूल्य से कम कीमत पर बागान मालिकों को बेचना पड़ता था। यह किसानों पर अत्याचार था। उनका आर्थिक शोषण था। ऊपर से नील की खेती से खेत की उर्वरता भी कम हो जाती थी। हजारों भूमिहीन मजदूर एवं गरीब किसान खाद्यान के बजाय नील और अन्य नकदी फसलों की खेती करने के लिये बाध्य हो गये थे। वहाँ पर नील की खेती करने वाले किसानों पर बहुत अत्याचार हो रहा था। अंग्रेजों की ओर से खूब शोषण हो रहा था। ऊपर से कुछ बगान मालिक भी जुल्म ढा रहे थे।

महात्मा गाँधी ने अप्रैल 1917 में राजकुमार शुक्ला के निमंत्रण पर बिहार के चम्पारन के नील कृषको की स्थिति का जायजा लेने वहाँ पहुँचे। उनके दर्शन के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। किसानों ने अपनी सारी समस्याएँ बताईं। सरकार गाँधीजी की लोकप्रियता को देखकर चिंतित हो उठी। उन्हें जबरन गिरफ्तार कर लिया गया और बिना सर–पाँव के आधार पर उनपर मुकदमा चलाया जाने लगा। लेकिन गाँधीजी को शीघ्र ही छोड़ दिया गया। किसानों के शिकायतों की जाँच के लिए सरकार ने एक समिति बनाई। इस समिति में गाँधीजी को भी एक सदस्य के रूप में रखा गया। समिति की सिफारिशों के आधार पर चंपारण कृषि अधिनियम बना। इस अधिनियम के जरिये तिनकठिया–प्रणाली को खत्म कर दिया गया। किसानों को इससे बहुत बड़ी राहत मिली। किसानों में नई चेतना जगी और वे भी राष्ट्रीय आन्दोलन को अपना समर्थन देने लगे।

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

एक विनम्र तरीके से, आप पूरी दुनिया को हिला सकते हैं... महात्मा गाँधी

रेखा चित्र : साभार .... प्रो. तापस मित्रा

नोट– पत्रिका में प्रकाशित सभी कविताएँ, रेखा चित्र, यात्रा वर्णन, संस्मरण इत्यादि रचनाकार द्वारा रचित उसके स्वयं के विचार दर्शाते हैं न कि संस्थान के तथा अपनी रचनाओं के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका
अंक 4, सितम्बर 2018

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष
प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन

श्री राजेश मोज़ा, कुलसचिव
डॉ. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक
डॉ क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री गौरव सिंह, सहायक प्राध्यापक
श्री सन्मार्ग मित्रा, सहायक प्राध्यापक
श्री शाजू वर्गीज़, उपकुलसचिव
श्री मनीष विनायक झोकरकर, सहायक कुलसचिव
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमती दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिंदी सहायक
सुश्री जयति दुदानी (छात्र), नामित प्रतिनिधि

सम्पादक मण्डल
डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर, प्रधान सम्पादक
श्री सौरभ तिवारी, सम्पादक
श्री अनुग्रह नगाइच, सम्पादक
श्री आनंद किशोर सिंह, सम्पादक

पत्रिका के पृष्ठों पर रेखा चित्र
डॉ. तापस मित्रा, सह प्राध्यापक
श्री आनंद वाडवेकर, सहायक प्राध्यापक

पत्रिका के पृष्ठों का अभिन्यास एवं अभिकल्पन
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिंदी सहायक
श्री अनीक घोष (छात्र)

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत में झीलों के शहर भोपाल में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में उपरोक्त चित्र में दर्शायी गयी मालवा वास्तुकला की एक अप्रितम रचना समाहित है, जो कि मालवा शासन की राजधानी मांडू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने 'महादेव' के प्रतीक में बनी एक सुन्दर शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। इस जलवाहिका में आरम्भ में भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु अर्पित करता है। जलवाहिका में प्रवाहित हो रहा जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है, जो कि वास्तुकला का एक अभिन्न अंग और योजना एवं वास्तुकला विद्यालय के स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की इसी पृष्ठभूमि पर बना शंखाकार रूप मे दर्शित 'S' अग्नि, 'P' वायु तरंग एवं 'A' पानी की बूंद को प्रदर्शित करती है। प्रतीक चिन्ह के अंतर्गत संस्कृत में लिखा श्लोक "स्थपति स्थापना: स्यात् सर्वशास्त्रविषारद:" समरांगण सूत्रधार से उद्धृत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिये। इस प्रकार से संस्थान के इस प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ-साथ सभी विषयों में पारंगत कर भविष्य के नए आयामों हेतु तैयार करना है।

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

नीलबड़ रोड, भौरी, भोपाल (म. प्र.) - 462030

Website: www.spabhopal.ac.in